**Editor - Vishal Pandey**

**Institution - INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY (IIT) KANPUR**

**Author - Pandit Sarayudasa Sri Vaishnava**

**॥श्री जानकीवल्लभो विजयते सदा॥**

**॥श्रीमते रामानंदाचार्याय नमः॥**

# अथ श्रीरामोपासनासिद्धांतप्रारम्भः

**नमाम्ययोध्यां सरयूं सरिद्वरां नमामि रामं रघुवंशभूषणम् ॥**
**अजाब्धिचन्द्रं नृपवर्य्यभूषणं नृपस्य सर्वां महिषी नमाम्यहम् ॥१॥**
**नमामि रामं रघुवंशभूषणं नमामि सौमित्रमतीव सुंदरम्॥**
**नमामि श्रीमद्भरतं कृपानिधिं नमामि शत्रुघ्नमुदारदर्शनम् ॥२॥**

अर्थ - अयोध्यापुरी को, सब नदियों में श्रेष्ठ सरयू जी को, रघुवंशभूषण श्रीरामचन्द्रजी को, अजकुल समुद्र से उत्पन्न चन्द्रमा के समान राजाओं में भूषण श्रीदशरथ महाराज को तथा कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रादि सब रानियों को मैं नमस्कार करता हूँ। रघुवंशकुलभूषण श्रीरामजी को, अतिशय सुन्दर श्रीलक्ष्मणजी को, तथा कृपासागर श्रीमान् भरतजी को, उदार दर्शनवाले श्री शत्रुघ्नजी को मैं नमस्कार करता हूँ।

प्रश्न - हे स्वामी जी ! आपके मुखारविंद से श्रीनारायण उपासना और सर्वोपरि श्रीकृष्णोपासनासिद्धांत मैंने सुना, अब आप दास पर कृपा करके श्रीरामजी का उपासनासिद्धांत कहिये जैसा कि सब अयोध्यावासी रामोपासक सब करते हैं।

उत्तर - हे शिष्य ! श्रीरामोपासक तो बहुत हुए हैं और वर्तमान काल में भी हैं परन्तु गोस्वामी श्री तुलसीदासजी महाराज के समान रामोपासक होना दुर्लभ है और न ऐसा कोई विद्वान ही हुआ है। यह बात भारतखण्ड में प्रसिद्द है, विशेष क्या कहें, जिनकी विमलकीर्ति को सब लोग घर-घर गा रहे हैं। हे शिष्य ! यदि गोस्वामी जी न होते तो हम सब दुष्टों को श्रीरामजी के सन्मुख कौन करता और हम श्रीरामजी को जानते भी नहीं कि श्रीराम कौन हैं ? कहाँ रहते हैं ? यह सब केवल गोस्वामी जी कि कृपा से ही संभव हो पाया है।

प्रश्न - हे स्वामी जी ! श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी कौन हैं ? किसके अवतार हैं ? सो कहिये।

उत्तर - हे शिष्य ! यह बात भरतखण्ड में विख्यात है कि गोस्वामीजी श्रीमदादिकवि वाल्मीकि जी के अवतार हैं बिना वाल्मीकि जी के ऐसा विमल प्रामाणिक श्रीरामयश का वर्णन कौन कर सकता है ?

प्रश्न - हे स्वामीजी ! महान कवि वाल्मीकि जी तुलसीदासजी क्यों हुए ? सो कहिये।

उत्तर - हे शिष्य ! लक्ष्मणजी के श्राप से तुलसीदास जी हुए हैं और विमल भाषा में श्रीरामचरितवर्णन किये हैं। यह प्रसंग विस्तार से ब्रह्मसंहिता में आया है और वसिष्ठ संहिता में भी कहा गया है।

**वाल्मीकिस्तुलसीदासः कलौ देवि भविष्यति।**
**रामचन्द्रकथां साध्वी भाषारूपां करिष्यति॥**
**(वशिष्ठ संहिता)**

अर्थ - वशिष्ठ जी का वचन है अरुन्धती जी से कि हे देवि ! वाल्मीकिजी कलियुग में गोस्वामी श्री तुलसीदास के रूप में अवतरित होंगे और श्रीरामचन्द्रजी कि कथा साध्वी भाषारूप करेंगे।

भविष्यपुराण में भी भगवान शिव माता पार्वती से वाल्मीकि जी के तुलसीदास के रूप में अवतार लेने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं -

**वाल्मीकिस्तुलसीदासः कलौ देवि भविष्यति।**
**रामचन्द्रकथामेतां भाषाबद्धां करिष्यति॥**

अर्थ - हे पार्वती ! महर्षि वाल्मीकि ही कलियुग में तुलसीदासजी के रूप में प्रकट होंगे और लोकभाषा में श्रीरामचरित्र को भाषाबद्ध करेंगे।

भक्तमाल ग्रन्थ में भी नाभा दास गोस्वामी जी ने लिखा है -

**"कलि कुटिल जीव निस्तार हेतु वाल्मीकि तुलसी भये"**

अर्थ - कलि काल के कुटिल जीवों के निस्तार हेतु ही महर्षिवाल्मीकिजी ही तुलसीदास हुए हैं ।

इससे सर्वथा सिद्ध है कि तुलसीदासजी वाल्मीकि जी के ही अवतार हैं - सो श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस जी में रामावतार के विषय में चार कल्प की कथा का वर्णन किया है जिसमें प्रथम हेतु

1. **"जय विजय का रावण कुम्भकर्ण होना।"**
यथा -

**"द्वारपाल हरि के प्रिय दोउ। जय अरु विजय जान सब कोऊ॥**
**विप्र शाप ते दूनौं भाई। तामस असुर देह तिन्ह पाई ॥**
**कनककसिपु अरु हाटकलोचन। जगत विदित सुरपति मदमोचन ॥**
**विजई समर वीर विख्याता। धरि वराहवपु एक निपाता॥**
**होइ नरहरि दूसर पुनि मारा। जान प्रह्लाद सुजस विस्तारा॥**
**भये निशाचर जाई ते,महावीर बलवान।**
**कुम्भकर्ण रावण सुभट, सुर विजई जग जान॥**
**मुक्त न भये हते भगवाना। तीनि जन्म द्विज वचन प्रमाना॥**
**एक बार तिन्ह के हित लागी। धरेउ सरीर भगत अनुरागी॥**
**कस्यप अदिति तहाँ पितु माता। दसरथ कौसल्या विख्याता॥**
**एक कलप एही विधि अवतारा। चरित पवित्र किये संसारा"** -

सो यह कथा भागवत में प्रसिद्द है। हे शिष्य ! इन्हीं जय विजय के लिए नारायण रामावतार को धारण करते हैं। यह कथा शिव संहिता में प्रसिद्द है। यथा प्रमाण-

**यदा स्वपार्षदौ जातौ राक्षसप्रवरौ प्रिये ।**
**तदा नारायणः साक्षाद्रामरूपेण जायते ॥**

अर्थ - शिवजी बोले कि हे प्रिये ! जब श्री भगवान् के दोनों पार्षद जय विजय रावण कुम्भकर्ण हुए तब साक्षात् श्रीमन्नारायण रामरूप होकर अवतार लिए।

2. दूसरा कारण यथा -

**"एक कल्प सुर देखि दुखारे। समर जलंधरसन सब हारे॥**
**संभु कीन्ह संग्राम अपारा। दनुज महाबल मरे न मारा॥**
**छल करि टारेउ तासु व्रत, प्रभु सुरकारज कीन्ह।**
**जब तेहि जानेउ मरम तब, शाप कोप करि दीन्ह॥**
**तासु शाप हरि कीन्ह प्रमाना। कौतुकनिधि कृपाल भगवाना॥**
**तहाँ जलंधर रावन भयउँ। रन हति राम परम पद गयउँ॥**
**एक जनम कर कारन एहा। जेहि लगी राम धरि नरदेहा"**

सो यह कथा कार्तिक माहात्म्य के १६वें अध्याय में प्रसिद्द है। हे शिष्य ! इस कल्प में विष्णु जी का रामावतार हुआ है।

3. तीसरा कारण नारद जी के श्राप से रुद्रगण रावण कुम्भकर्ण हुए हैं। यथा -

**"नारद शाप दीन्ह एक बारा।**
**कल्प एक तेहि लगि अवतारा"**

सो यह कथा **दुर्वासा उपपुराण** में तथा **शिव संहिता** में भी प्रसिद्ध है। हे शिष्य ! इसमें **क्षीरसागरवासी अष्टभुजावाले "भूमा" पुरुष का रामावतार** हुआ है।

4. चौथा कारण कैकेय देश के राजा सत्यकेतु के पुत्र प्रतापभानु और अरिमर्दन रावण कुम्भकर्ण भये हैं तब सर्वोपरि साकेतविहारी साक्षात् श्रीरामजी आये हैं जिस रूप को देखकर सतीजी को मोह हुआ है यथा -

**"अपर हेतु सुनु सैलकुमारी। कहौं विचित्र कथा विस्तारी॥**
**जेहि कारण अज अगुन अरूपा। ब्रह्म मयेउ कोसलपुरभूपा॥**
**जो प्रभु विपिन फिरत तुम देखा। बंधु समेत धरे मुनिवेषा॥**
**जासु चरित अवलोकि भवानी। सती शरीर रहिउ बौरानी॥"**

ऐसा शिवजी ने कहा है कि यही श्री राम शिव जी के इष्ट हैं, इन्हीं के नामबल से पंचकोशी काशी में वे सब चराचर जीवों को परमपद देते हैं। हे शिष्य ! जब प्रतापभानु रावण होता है तब साकेतवासी श्रीरामजी आते हैं।

**यथा शिव संहितायाम्**
**प्रतापी राघवसखा भ्रात्रा वै सह रावणः॥**
**राघवेण तदा साक्षात्साकेतादवतीर्य्यते॥(शिव संहिता)**

अर्थ - प्रतापी जो श्रीरामजी के सखा हैं जब भाई के सहित निश्चय करके रावण कुम्भकर्ण होते हैं तब राघवजी साक्षात् साकेत से आकर अवतार लेते हैं। हे शिष्य ! यह प्रतापी श्रीरामजी के परमप्रिय सखा हैं सो एक दिन कन्दुक खेलने में प्रसन्न होकर रामजी ने वर दिया कि तुम जाकर भरतखण्ड में रावण होओ और ७२ चौकड़ी राज करो पीछे हम आकर तुम्हारे संग घोर युद्ध करेंगे। वही प्रतापी रावण हुआ है। इनके लिए ही अनादि साकेतविहारी श्री रामचन्द्र अवतार धारण करते हैं यथा -

**"सबकर परम प्रकासक जोई।**
**राम अनादि अवधपति सोइ"**

इत्यादि गोस्वामीजी का भी सिद्धांत है कि यह अवतार सर्वोपरि है। हे शिष्य ! पूर्वोक्त श्रीनारायण से और श्रीकृष्णजी से श्रीरामचन्द्र परे हैं ऐसा नारद पञ्चरात्र के आनन्दसंहिता में कहा गया है। यथा -

**द्विभुजाद्राघवो नित्यं सर्वमेतत्प्रवर्तते ।**
**परान्नारायणांचैव कृष्णात्परतरादपि ॥**
**उभयपरमात्मनः श्रीमान रामो दाशरथिः स्वराट॥**
**(आनन्द संहिता , नारदपञ्चरात्र)**

अर्थ - द्विभुज श्री राघव जी नित्य हैं सर्वोपरि हैं, नारायण से और श्रीकृष्ण से भी परे हैं दोनों(अर्थात श्री नारायण और श्री कृष्ण) के परमात्मा श्रीराम जी हैं। श्रीरामजी से परे कोई भी नहीं है। दशरथनन्दन श्रीराम स्वराट हैं अर्थात परमस्वतंत्र हैं सबके परम कारण हैं इनका कोई कारण नही है।

ऐसा निश्चय जानो इसमें पक्षपात समझना भूल है।

हे शिष्य ! इन साकेतविहारी श्रीरामचन्द्र जी के माता पिता स्वायम्भुव मनु और शतरूपा होते हैं। सो विस्तार से गोस्वामी जी ने वर्णन किया है और **शिवसंहिता, लोमशसंहिता और मनुसंहिता** में भी इसका वर्णन है।

प्रश्न - हे स्वामी जी ! गोस्वामी जी ने तो रामायण में वासुदेव मन्त्र लिखा है और लिखा है कि "वासुदेव पद पंकरुह दम्पति मन अति लाग" सो यहाँ पर कौन वासुदेव हैं - "वसुदेव के पुत्र कृष्ण वासुदेव हैं कि दूसरे कोई वासुदेव हैं" सो कहिये क्योंकि मुझे बहुत संदेह है।

उत्तर - हे शिष्य ! वासुदेव कृष्ण का भी नाम है और नारायण का भी नाम है और रामजी का भी नाम है भगवान् भगवान् तत्त्व रूपेण एक ही हैं केवल रूप भेद से भिन्न हैं और वासुदेव नाम के वस् धातु से सर्वव्यापी अर्थ होता है और सर्वव्यापी नारायण, राम, कृष्ण सब हैं अर्थात भगवान के सब स्वरूप सर्वव्यापी हैं ,इसमें संदेह नहीं है परन्तु यहाँ पर साकेत विहारी राम ही का अर्थ मुख्य है क्योंकि मनु जी के सामने रामरूप ही प्रकट हुए यदि नारायण और कृष्ण के अर्थ में प्रयुक्त हुआ होता तो भगवान् उसी रूप में ही प्रकट होते सो है नहीं फिर दूसरा अर्थ करना पक्षपात है और वासुदेव नाम का अर्थ शंकर जी ने ऐसा कहा है **श्रीमद्भागवत के चौथे स्कंध के तीसरे अध्याय में। यथा शिव उवाच** ॥

**सत्त्वं विशुद्धं वसुदेवशब्दितं यदीर्यते तत्र पुमानपावृतः**
**सत्त्वे च तस्मिन् भगवान्वासुदेवोह्यधोक्षजो मे नमसाविधीयते॥**

अर्थ - विशुद्ध सत्व अंतःकरण वासुदेव शब्द से कहा है, तहां आवरण रहित पुरुष वासुदेव प्रकाश है इससे सब जीवमात्र के शुद्ध सत्त्व में भगवान् वासुदेव विराजमान हैं इससे ऐसे अंतःकरण में भगवान् वासुदेव जो इन्द्रियों से अगोचर हैं मैं उनकी प्रणाम द्वारा सेवा करता हूँ।

ऐसा कहा है इससे यहाँ पर वासुदेव परब्रह्म श्रीराम ही हैं जिनके अंश से कोटि-कोटि ब्रह्मा विष्णु शिव होते हैं ऐसा गोस्वामी जी का सिद्धांत है यथा -

**"शम्भू विरंचि विष्णु भगवाना। उपजहिं जासु अंश ते नाना"**

फिर आगे श्रीजानकी जी के विषय में वे कहते हैं कि

**"वामभाग सोभति अनुकूला।आदि शक्ति छबि निधि जगमूला॥**
**जासु अंश उपजहिं गुन खानी। अगनित लक्ष्मि उमा ब्रह्मानी"**

इस प्रकार श्रीराम जी ही सर्वोपरि हैं।

प्रश्न - हे स्वामी जी ! मनुजी ने जो साकेत विहारी रामजी के लिए तप किया उसका कहाँ प्रमाण मिलता है सो कहिये

उत्तर - हे शिष्य ! **पद्मपुराण उत्तरखण्ड 242 अध्याय** में ऐसा कहा है यथा -

**स्वायम्भुवो मनुः पूर्वं द्वादशार्णं महामनुम् ।**
**जजाप गोमतीतीरे नैमिषे विमले शुभे ॥**
**तेन वर्षसहस्त्रेण पूजितः कमलापतिः ।**
**मत्तो वरं वृणीष्वेति तं प्राह भगवान् हरिः ॥**
**पुत्रस्त्वं भव देवेश त्रीणि जन्मानि चाच्युत ।**
**त्वां पुत्रलालसत्वेन भजामि पुरुषोत्तमम् ॥**
**भविष्यति नृपश्रेष्ठ यत्ते मनसि कांक्षितम् ।**
**ममैव च महत्प्रीतिस्तव पुत्रत्वहेतवे ॥**
**स्थितिप्रयोजने काले तत्र तत्र नृपोत्तम ।**
**त्वयि जाते त्वहमपि जातोस्मि तव सुव्रत ॥**

अर्थ - स्वायंभुव मनु जी पूर्व कल्प में शुभ विमल गोमती गंगा के तीर नैमिषारण्य में द्वादशाक्षर वासुदेव मंत्र को एक सहस्त्रवर्ष तक जाप किये । उसी से कमलापति का पूजन किया तब भगवान प्रसन्न होकर बोले, कि मुझसे वर मांगो, यह सुनकर स्वायंभुव मनु बड़े प्रसन्न होकर बोले, कि हे देवेश ! अच्युत भगवान् ! आप तीन जन्म तक मेरे पुत्र होइए । क्योंकि आप को पुत्र रूप में प्राप्त करने की मेरी लालसा है इसलिए मैं आपको भजता हूँ। भगवान बोले, कि हे नृपश्रेष्ठ ! आपके मन में जो कुछ है वह अवश्य पूर्ण होगा मेरी भी आपसे बहुत प्रीति है

इसलिए आपके पुत्रत्व हेतु प्रयोजन काल पाकर के जहाँ जहाँ आप जन्म लेंगे वहाँ वहाँ हम भी आपके पुत्र होवेंगे यह बात निश्चित है।

**परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम।**
**धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि तवानघ॥**
**एवं दत्त्वा वरं तस्मै तत्रैवान्तर्दधे हरिः।**
**अस्याभूत्प्रथमं जन्म मनोः स्वायम्भुवस्य च॥**
**रघूणामन्वये पूर्वं राजा दशरथो ह्यभूत।**
**द्वितीयो वसुदेवोभूद्व्रिष्णीनामन्वये विभुः॥**
**कलेर्दिव्यसहस्त्राब्दप्रमाणस्यान्त्यपादयोः।**
**शम्भलग्रामकं प्राप्य ब्राह्मणः संजनिष्यति॥**

अर्थ - साधुओं के रक्षार्थ और दुष्टों के विनाशार्थ, धर्मसंस्थापनार्थ आपके यहाँ प्रकट होऊंगा , ऐसा वर देकर वहाँ भगवान् अंतर्धान हो गए, पीछे स्वायम्भुव मनु का जन्म रघुकुल के राजा दशरथ के रूप में हुआ। दूसरा जन्म वसुदेव के रूप में और तीसरा जन्म कलियुग के अंतपाद में शम्भलग्राम में हरिव्रत ब्राह्मण के रूप में होगा।

**कौशल्या समभूत्पत्नी राज्ञो दशरथस्य हि।**
**यदोर्वंशस्य सेवार्थं देवकी नाम विश्रुता॥**
**हरिव्रतस्य विप्रस्य भार्या देवप्रभा पुनः।**
**एवं मातृत्वमापन्ना त्रीणि जन्मानि शार्ङ्गिणः॥**
**कैकेय्यां भरतो जज्ञे पांचजन्यांशचोदितः।**
**सुमित्रा जनयामास लक्ष्मणं शुभलक्षणम् ॥**
**शत्रुघ्नं च महाभागा देवशत्रुप्रतापनम्।**
**अनंतांशेन संभूतो लक्ष्मणः परवीरहा॥**
**सुदर्शनांशाच्छत्रुघ्नः संजज्ञेमितविक्रमः।**

अर्थ - रानी शतरूपा ही राजा दशरथ की रानी कौशल्या हुई फिर वही यदुवंश की सेवार्थ देवकी नाम से विख्यात हुई। फिर हरिव्रत ब्राह्मण की स्त्री देवप्रभा हुई। इसप्रकार  तीन जन्म पर्यन्त भगवान् की मातृत्व को प्राप्त हुई। कैकेयी से

पांचजन्य शंख के अंश से भरतजी हुए और सुमित्रा जी ने शुभलक्षणों से पूर्ण श्रीलक्ष्मणजी को प्रकट किया। और देवशत्रुओं को दुःख देने वाले शत्रुघ्न को भी जन्म दिया जिन में शेष के अंश से लक्ष्मण जी हुए और सुदर्शन के अंश से बड़े पराक्रमी शत्रुघ्न हुए ऐसा लिखा है।

प्रश्न - हे स्वामी जी ! यहाँ पद्मोत्तरखंड में तो नारायण का अवतार कहा है फिर मनु शतरूपा प्रसंग में सकेतविहारी राम कैसे हुए ? सो कहिये।

उत्तर - हे शिष्य ! यहाँ बहुत गुप्तभेद कहा है जैसे पूर्व में गोलोकवासी कृष्ण के और नारायण के माता पिता कश्यप अदिति कहे गए हैं वही भेद यहाँ पर है।

प्रश्न - हे स्वामी जी ! वह भेद कौन हैं ? सो कहिये।

उत्तर - हे शिष्य ! **वेदसारोपनिषद** में लिखा है कि -

**जनको ह वैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसृत्य प्रपच्छ को ह वै महानपुरुषोयं ज्ञात्वेह विमुक्तो भवतीति स होवाच। कौशल्येयो रघुनाथ एव महापुरुषः तस्य नामरूपधामलीलामनोवाचनाद्यविषयाः स पुनरुवाचेदृशं कथमहं शक्नुयां विज्ञातुं ज्ञापकाज्ञानादिति स पुनः प्रतिवक्ति अथैते श्लोका भवंति॥**

अर्थ - जनक विदेह जी ने याज्ञवल्क्य जी के समीप जाकर कहा - कि निश्चयकर महानपुरुष कौन है जिनको जानकर प्राणी इस संसार से मुक्त होते हैं। यह सुनकर योगी याज्ञवल्क्य जी बोले, कौशल्यानंदन रघुनाथ ही महानपुरुष हैं। उनके नाम, रूप, लीला, धाम चारों मन वचन से अगोचर हैं। यह सुनके फिर जनक जी बोले कि वे कैसे हैं मैं उन्हें जानना चाहता हूँ, और जिज्ञासु उन्हें कैसे जान सकता है ? सो कहिये। यह सुनकर वह बोले, इन सबका मैं श्लोकों से विधिपूर्वक उत्तर देता हूँ, सावधान होकर सुनो, क्योंकि यह सूक्ष्म सिद्धांत है। यथा -

**विरजायाः परे पारे लोको वैकुण्ठसंज्ञितः।**
**तन्मध्ये राजतेयोध्यासच्चिदानन्दस्वरूपिणी॥**
**तत्र लोके चतुर्बाहू रामनारायणः प्रभुः।**

**अयोध्यायां यदा चास्य ह्यवतारो भवेदिह ॥**
**तदास्ति रामनामेदमवतारविधौ विभोः ।**
**तन्नाम्नो नामरहितस्याम्नांत नाम तस्य हि ॥**

अर्थ - विरजा नदी के परे उस पार में वैकुण्ठ लोक है। उसके मध्य में सच्चिदानन्दरूप श्रीअयोध्यापुरी शोभा देती है । उस लोक में चतुर्बाहु रामनारायण प्रभु हैं वही जब अयोध्यापुरी में रामावतार धारण करते हैं। अब प्रश्न यह है कि अवतार क्यों धारण करते हैं ? उन सकेतविहारी श्रीराम जी के नाम को सूचित करने के लिए रामनारायण प्रभु राम नाम को धारण करते हैं। यहां पर यह सिद्धांत है कि जो रामनारायण प्रभु हैं वे साकेतविहारी रामजी के चरित्र के आचार्य्य हैं, वे ही अयोध्याजी में रामावतार को धारणकर मन वचन से परे जो नाम, रूप, लीला, धाम है उसको सर्वविदित करते हैं । इसी में आगे कहा गया -

**दशकण्ठ वधाद्यादिलीला विष्णोः प्रकीर्तिता ।**
**स कदचित्तु कल्पेस्मिन लोके साकेतसंज्ञिते ॥**
**पुष्पयुद्धं रघूत्तंसः करोति सखिभिः सह ।**
**कस्मिन्कल्पे तु रामोसौ बाणजन्येच्छया विभुः ॥**
**तैरेव सखिभिः सार्द्धमाविर्भूय रघूद्वहः ।**
**रावणादिवधे लीलां यथा विष्णुः करोति सः ॥**
**तथाऽयमपि तत्रैव करोति विविधाः क्रियाः ।**
**क्रियाश्च वर्णयित्वाथ विष्णुलीला विधानतः ॥**
**लीलानिर्वचनीयत्वं ततो भवति सूचितम्।**

अर्थ - रावणादिक का वध करना विष्णुलीला कहा है इसलिए किसी कल्प में साकेत लोक में रघूत्तम सखियों के सहित पुष्प युद्ध करते हैं । भाव - पुष्प से क्रीड़ा करते हैं वही साकेत विहारी यह रामचन्द्रजी बाण विद्या की इच्छा करके सखा सखियों के सहित रघूद्वह अवतार धारण करते हैं और रावणादि वध लीला जैसा विष्णु करते हैं वैसे ही सारी लीला विधान क्रिया को श्री साकेतविहारी रामजी भी अयोध्या में नाना विधि से करते हैं । विष्णुलीला के विधान से साकेतविहारी श्रीरामजी अपनी क्रिया अर्थात साकेत के विभवलीला वर्णन करके अनिर्वचनीयत्वलीला अर्थात जो मन वचन से परे हैं वह सूचित है।

**किं चाऽऽयोध्यापुरीनाम साकेत इति चोच्यते ॥**
**इमामयोध्वामाख्याय सायोध्याय वर्ण्यते पुनः ॥**
**अनिर्वाच्यत्वमेतस्याऽव्यक्तमेवानुभूयते ॥**
**रामावतारमाधत्ते विष्णुः साकेतसंज्ञिते ॥**
**तद्रूपं वर्णयित्वानिर्वचनीयं प्रभोः पुनः ॥**
**रूपमाख्यायते विद्भिर्महतः पुरुषस्य हि ॥**
**इत्यथर्वणवेदे वेदसारोपनिषदि प्रथमखण्डे ॥**

अर्थ - किन्तु जो अयोध्यापुरी नाम है वही को साकेत ऐसा कहते हैं इस अयोध्यापुरी को विख्यात होने के लिए वह अयोध्यावर्णन करते हैं इस अयोध्यापुरी को विख्यात होने के लिए वह अयोध्यावर्णन करते हैं । भाव - भूमण्डल वाली अयोध्या से अनिर्वचनीय अयोध्या सूचित होती है और साकेत में जो विष्णु रामनारायण प्रभु हैं सो रामावतार को धारण करके उस मन वचन से परे प्रभु श्रीरामजी के रूप को वर्णन करके सूचित करते हैं जिसमें साकेतविहारी रामरूप को सब कोई जाने ऐसा अथर्वण वेदोक्तवेदसारोपनिषद के प्रथमखण्ड में कहा है। हे शिष्य ! इस सिद्धांत को खूब ध्यान देकर विचार करो कि कैसा सिद्धांत है इसी सिद्धांत के अनुकूल पद्मोत्तरखंड का वचन है इससे साकेतविहारी रामजी का चरित्र नारायण चरित्र से बताया गया है इस भेद को केवल रसिकजन जानते हैं ऐसे ही **स्कंदपुराण के निर्वाणखंड रामगीता** में शंकरजी का वचन है

**भार्गवोयं पुरा भूत्वा स्वीचक्रे नाम ते विधिः ।**
**विष्णुर्दाशरथिर्भूत्वा स्वीकरोत्यधुना पुनः ॥**
**संकर्षणस्ततश्चाहं स्वीकरिष्यामि शाश्वतं ।**
**एकमेव त्रिधा जातं सृष्टिस्थित्यन्तहेतवे ॥**

अर्थ - शंकरजी बोले, श्रीरामजी ! ये जो ब्रह्मा जी हैं सो पूर्वकाल भार्गव (परशुराम) होकर के आपके रामनाम को ग्रहण किये फिर विष्णु दाशरथि राम होकर आपका राम नाम इस काल में ग्रहण करते हैं। और मैं संकर्षण (बलराम) होकर आपका रामनाम ग्रहण करता हूँ। भाव - कल्प कल्प में तीनों होकर रामनाम को धारण करता हूँ। एक ही तीनों रूप होते हैं सृष्टि पालन संहार के लिए

इससे विष्णुनामधारी राम हैं स्वयं नहीं। हे शिष्य ! महर्षि वाल्मीकिजी का भी यही सिद्धांत है।

प्रश्न - हे स्वामी जी ! वाल्मीकिजी कौन अवतार की कथा वर्णन किये हैं सो कृपाकर के कहिये।

उत्तर - हे शिष्य ! वाल्मीकिजी साकेतवासी रामजी का चरित्र वर्णन किये हैं, जो कहो कि कैसे जाना जाये तो इसमें गुप्त भेद यह है कि वाल्मीकिजी ने नारदजी से प्रश्न किया कि इस काल इस लोक में 1 गुणवान 2 वीर्यवान 3 धर्मज्ञ 4 कृतज्ञ 5 सत्यवाक्यवाले 6 दृढव्रतवाले 7 सर्व जीव हितकरने वाले 8 विद्वान 9 समर्थ 10 प्रियदर्शी 11 आत्मवान 12 क्रोध को जीतने वाले 13 कांतिमान 14 दोषरहित गुण 15 सुन्दरचरित्र वाले 16 देवता और दैत्य क्रोधयुक्त किसके युद्ध में भय को प्राप्त होते हैं यह 16 गुण से युक्त कौन नर हैं सो कहिये ? यह सुन पूर्णाधिकारी जानकर नारदजी बोले कि आपके कहे हुए गुणों से युक्त पुरुष बहुत दुर्लभ है तो भी विचारकर कहता हूँ। त्रिलोकदर्शी नारदजी ने तीनों लोकों में विचारा तो कोई नहीं ठहरा पीछे बोले कि जो आपने गुण कहे हैं उन्हीं गुणों से युक्त नर को कहता हूँ, सुनो तब नारद जी ने 64 गुण से युक्त इक्ष्वाकु वंश में प्रकट श्रीराम को ही बताया। हे शिष्य ! यहाँ पर महर्षिजी के प्रश्नोत्तर में केवल नर शब्द कहा है और विचार करने से नर साकेताधिपति श्रीराम ही काअर्थ है क्योंकि परमात्मा का यथार्थरूप नराकार ही कहा है।

यथा - महाभारते -

**"नरतीति नरः प्रोक्तः परमात्मा सनातनः "॥**

**"नृणाति प्राप्यति आनंदमिति नरः" , "नरति व्याप्नोतीति नरः"** अर्थात सर्व चराचर में व्याप्त हो उसको नर अर्थात सनातन परमात्मा जानना चाहिए। ऐसा आनन्द संहिता में भी कहा है। यथा -

**आनन्दो द्विविधः प्रोक्तो मूर्तश्चामूर्त एव च।**
**अमूर्तस्याश्रयो मूर्तः परमात्मा नराकृतिः॥**
**स्थूलमष्टभुजं प्रोक्तं सूक्ष्मं चैव चतुर्भुजम।**
**परं तु द्विभुजं रूपं तस्मादेत्तच्चराचरम॥**

अर्थ - आनन्द दो प्रकार का होता है एक मूर्त (सगुण) और एक अमूर्त(निर्गुण)। इन दोनों में सगुण रूप निर्गुण रूप का आश्रय है और परमात्मा नराकार हैं। अष्टभुजवाले भूमारूप स्थूल हैं और चतुर्भुज वाले नारायण सूक्ष्म हैं।

**भाव - अष्टभुजवाले सगुण हैं चतुर्भुजवाले निर्गुण हैं और नराकार परमात्मा द्विभुज श्री रामचन्द्र जी हैं। इन्हीं से चराचर जगत व्याप्त हैं।**

प्रश्न - हे स्वामी जी ! नराकार नारायण नहीं हैं क्या रामजी हैं ?

उत्तर - हे शिष्य ! यथार्थ रूप में नराकार रूप श्री राम ही हैं क्योंकि द्विभुज स्वरूप हैं और नारायणादिकरूप चतुर्भुज हैं इससे नराकार सिद्ध नहीं होता है। ऐसे तो नर शब्द से परमात्मा का ही बोध होता है इसलिए ऐसे तो सब स्वरूप हैं किन्तु वाल्मीकि जी ने सर्वत्र रघुनाथ जी को मनुष्य कहकर ही वर्णन किया है और श्रीराम जी ने भी ब्रह्मा जी से अपने को मनुष्य की आत्मा कहा है यह बात युद्धकाण्ड में प्रसिद्ध है जब ब्रह्मा जी ने रामजी से कहा की आप संसार के कर्ता हैं, रुद्रों में आप आठवें रूद्र हैं, चंद्र सूर्य आपके नेत्र हैं, लोकों के आदि और अंत में आप ही दिखाई पड़ते हैं। यह सुनकर रामजी बोले कि -

**आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजं।**
**योहं यस्य यतश्चाहं भगवांस्तद्ब्रवीतु मे॥**

अर्थ - रामजी कहते हैं कि मैं मनुष्य की आत्मा हूँ। और मैं दशरथ का पुत्र राम हूँ। यह सुनकर ब्रह्मा जी चुप हो गए तब रामजी बोले - कि जो मैं हूँ, जहाँ से जिस लिए आया हूँ वह आप कहिये तब ब्रह्मा जी बोले कि "भवान्नारायणो देवः श्रीमानश्चक्रायुधो विभुः " ऐसा कहा क्योंकि ब्रह्मा जी तो नारायण ही स्वरूप तक पहुंचे हैं और नारायण श्रीराम जी के अंश हैं। यथा **भरद्वाजसंहितायाम** -

**नारायणोपि रामांशः शंखचक्रगदाब्जधृक।**
**चतुर्भुजस्वरूपेण वैकुण्ठे च प्रकाशते ॥**
**अवताराः बहवः सन्ति कलाश्चांशविभूतयः।**
**राम एव परं ब्रह्म सच्चिदानन्दमव्ययम॥**

अर्थ - नारायण भी रामजी के ही अंश हैं और शंख, चक्र, गदा, पद्मयुक्त चतुर्भुज स्वरूप से वैकुण्ठ में प्रकाश करते हैं । कला अंश विभूति आदि भेद से बहुत से अवतार हैं और रामजी ही पर ब्रह्म हैं, सच्चिदानंद, माया से रहित इसलिए नित्य नररूप राम ही परब्रह्म हैं ॥

**वसिष्ठ संहिता** मे भी कहा गया है कि -

**पश्चिमेचोत्तरे भागे पूर्वे पुर्याः सरित्तटा ।**
**वहति श्रीमती नित्या सरयूर्लोकपावनी ॥**
**चिन्तामणिमयी नित्या चतुर्विंशतियोजना ।**
**परितो भात्ययोध्याया भूमिः सच्चिन्मयी मृदुः ॥**
**यत्र वृक्षलतागुल्मपत्रपुष्पफलादिकम् ।**
**यत्किञ्चित्पक्षिभृंगादि तत्सर्वं भाति चिन्मयं ॥**
**नित्या इक्ष्वाकवः सर्वे नित्या रघुकुलोद्भवाः ।**
**नित्योहं मुनयो नित्या नित्याः सर्वे च मन्त्रिणः ॥**
**अयोध्यावासिनो नित्या ब्राह्मणप्रमुखास्तथा ।**
**नित्या भृत्याश्च दास्यश्च श्रीराजकुलसेवकाः ॥**

अर्थ - पश्चिम और उत्तर भाग में तथा पूर्व में नित्य रूप से श्रीमती सरयूजी बहती हैं । चिन्तामणिमयी नित्या सत्यस्वरूपा २४ योजन १६ कोस चौड़ी गोलाकार सच्चिदानदमयी अति कोमल भूमि से अयोध्यापुरी सुशोभित है । जहाँ वृक्ष, लता, गुल्म, पत्र, पुष्प, फलादिक सब जो कुछ पक्षी भृंगादि हैं वह सब सच्चिदान्दमय शोभित हैं । इक्ष्वाकु नित्य हैं सब रघुवंशी नित्य हैं, वशिष्ठ जी कहते हैं कि मैं भी नित्य हूँ, सब मुनि लोग नित्य हैं, आठों मंत्री नित्य हैं । अयोध्यावासी सब नित्य हैं , सब ब्राह्मण नित्य हैं, जितने नौकर-चाकर राजकुलसेवक हैं वे सब नित्य हैं ।

**कौशल्या श्रीमती नित्या नित्यो दशरथो नृपः ।**
**कैकेयी च सुमित्राद्या नित्या श्रीराजयोपतिः ॥**
**श्रीरामो लक्ष्मणश्चैव शत्रुघ्नो भरतस्तथा ।**
**नित्या रघुकुलोद्भूता नित्यास्सर्वे कुमारकाः ॥**

**नित्यं दशरथस्यांके स्थितस्य परमात्मनः ।**
**तावद्ब्रह्ममहेशाद्याः सेन्द्रा ब्रह्मांडकोटयः ॥**
**कटाक्षाद्रामचन्द्रस्य लयं यावद्भवन्ति च ।**
**रामस्य नाम रूपं च लीलाधाम परात्परं ॥**
**एतच्चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानन्दविग्रहं ।**

अर्थ - श्रीमती कौशल्या नित्य हैं राजा दशरथजी नित्य हैं और कैकेयी सुमित्रा आदि सब राजस्त्री नित्य हैं । श्रीरामजी लक्ष्मण जी शत्रुघ्न जी तथा भरतजी नित्य रघुकुल में सब राजकुमार हैं नित्य दशरथजी के गोद में परमात्मा श्रीरामजी स्थित हैं । तब तक ब्रह्मा महेशादिक देव सब इन्द्र सहित कोटि कोटि ब्रह्माण्ड श्रीरामचन्द्रजी के कटाक्ष से नाश और उत्पन्न होते हैं | श्रीरामजी के नाम रूप लीला धाम परात्पर हैं तथा यह चारों नित्य सच्चिदानन्द के स्वरूप हैं । हे शिष्य ! इन सब प्रमाणों से नित्य दशरथात्मज नराकार परब्रह्म हैं यही सिद्धांत महर्षि वाल्मीकि जी का है क्योंकि रावण की मृत्यु नर ही के हाथ से है यही गोस्वामीजी का मत है यथा "इच्छामय नर वेष सँवारे ॥ होइहौं प्रगट निकेत तुम्हारे ॥ " यह वचन मनु जी से रामजी का है फिर "नर के कर आपन वध वांची ॥" ऐसा कहा है इससे नररूप सनातन परमात्मा राम ही हैं दूसरा नहीं यह निश्चय है इसी से वाल्मीकिजी ने रामायण में रावण कुम्भकर्ण के पूर्वजन्म के वृत्तान्त नहीं लिखे हैं कि जय विजय हैं, या कि जलंधर है, या रुद्रगण हैं या फिर प्रतापभानु रावण है सो कुछ नहीं कहा और न दशरथ ही जी के वृत्तान्त को कहा कि वे कश्यप अदिति हैं या कि मनु शतरूपा हैं क्योंकि इन सबके नाम कहने से प्रसिद्ध हो जायेगा और महर्षिजी का गुप्त सिद्धांत है और दूसरा माधुर्य पक्ष है क्योंकि श्रीरामजी अनन्तमाधुर्यस्वरूप ही हैं यथा **महेश्वरतन्त्रे -**

**महेश्वरतन्त्रे**

**शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्यानां गुह्यमुत्तमम् ।**
**ब्रह्मनारदसंवादं महापातकनाशनम् ॥**

**ब्रह्मोवाच नारदं प्रति**

**नारायणमुखोद्गीर्णं प्रोच्यते यच्छरुतं मया ।**
**ततः किंचित्प्रवक्ष्यामि शृणु ब्रह्मन् महाऋषे ॥**
**चिन्मयानंद सारात्माऽनन्तमाधुर्य्यविग्रहः ।**
**परिपूर्णतम ब्रह्म स्वयं रामः सनातनः ॥**

अर्थ-शिवजी वोले हे देवि ! सुनो मैं गुप्त से भी उत्तम गुप्त रहस्य कहता हूँ ब्रह्मा और नारद का संवाद जो कि महापाप का नाश करने वाला है। ब्रह्माजी बोले हे महाऋषे ! सुनो वैकुण्ठ में नारायण के मुख से जो कुछ मैने सुना है उस में से कुछ कहता हूं। सच्चिदानंद, सार के सार, अनंत माधुर्य्य के स्वरूप, परिपूर्णतम स्वयं सनातन ब्रह्म रामजी हैं इसीलिए महर्षि जी ने सर्व माधुर्य ही रूप वर्णन किया है इसी कारण से महर्षिजी को लक्ष्मणजी ने शाप दिया है जो ब्रह्मसंहिता में प्रसिद्ध है।

प्रश्न - हे स्वामीजी ! यह कथा कैसी है ये कहिये।

उत्तर- हे शिष्य ! यह कथा ऐसी है कि एक दिन वाल्मीकि जी साकेत लोक गये तब श्रीरामजी ने हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। महर्षि जी ने आशीर्वाद दिया कि हे राज कुमार ! चिरंजीवी रहो यह सुनके लक्ष्मण जी को क्रोध हुआ और वे बोले कि आपने रामायण में तो सर्वत्र राजकुमार ही करके रामजी का वर्णन किया है, वही दृष्टि यहाँ भी है इसलिए आप फिर से राजकुमार के ऐश्वर्ययुक्त चरित्र का भाषा में वर्णन करो तो वे ही तुलसीदास होकर चारोंकल्प के कथा लिख के रामयश वर्णन किये हैं और श्रीराम जी का स्वभाव यह है कि जो कोई उनकी ऐश्वर्ययुक्त बड़ाई करता है तो सकुचा जाते हैं यही विनय पत्रिका में कहा है **"सहज स्वरूप कथा मुनि वरनत रहत सकुचि सिरनाई ॥ केवट मीत कहे सुख मानत वानरबन्धु बड़ाई"** ऐसा कहा है इसलिए बड़े का यही स्वभाव है कि प्रशंसा करने से सकुचा जाते हैं इसीलिए रामजी ने अपने को स्वयं ब्रह्म कहीं नहीं कहा यही बड़े का स्वभाव है।

प्रश्न- हे स्वामी जी ! जब दूसरे जन्म में मनु शतरूपा वसुदेव देवकी हुए तो रामजी कृष्णावतार धारण किये कि नहीं वो कहिये।

उत्तर - शिष्य ! **भुशुण्डिरामायण** में ऐसा लिखा है कि

**हर्षिता राधिका तत्र जानक्यंशसमुद्भवा।**
**रामस्यांशांशसंभूतः कृष्णो भवति द्वापरे॥**
**सीतायाश्च त्रयोप्यंशाः श्रीभूलीलादिभेदतः ।**
**श्रीभवेद्रुक्मिणी भूः स्यात्सत्यभामा दृढव्रता॥**
**लीला स्याद्राधिका देवी सर्वलोकैकपूजिता ।**

**तप्तकांचनगौरांगी शक्तीनां शक्तिदायनी ॥**
**कोटिलक्ष्मीसखीवृन्दसीमंतोत्तंशमैथिली ।**

अर्थ - वहाँ आनंदपूर्वक श्रीराधिकाजी श्रीजानकीजी के अंश से उत्पन्न होती हैं और श्रीरामजी के अंशांश से द्वापर में श्रीकृष्ण जी प्रकट होते हैं। श्रीसीताजी के अंश से श्रीदेवी भूदेवी लीलादेवी तीनों हैं जिसमें श्रीलक्ष्मी रुक्मिणी है, भूदेवी दृढ़व्रतवाली सत्यभामा हैं और लीलादेवी सब लोकों द्वारा पूजित श्रीराधिकाजी हैं । तप्त सुवर्ण से गौरांगी सब देवी दुर्गा लक्ष्मी सरस्वती आदिशक्तियों को भी शक्ति देने वाली कोटि लक्ष्मी और सखिवृंद से श्रीसीताजी सेवित हैं और ये सब उनके अंश से ही प्रकट होती हैं ऐसा कहा गया है इसलिए कृष्ण जी भी राम ही के अंश हैं इसमें संदेह करना वृथा है इसके अलावा भी सामवेद की **सुदर्शन संहिता** में दिया है कि

**मत्स्यश्च रामहृदयं योगरूपी जनार्दनः ।**
**कूर्मश्चाधारशक्तिश्च वाराहो भुजयोर्बलम ॥**
**नारसिंहो महाकोपो वामनः कटिमेखला ।**
**भार्गवो जङ्घ्योर्जातो बलरामश्च पृष्ठतः ॥**
**बौद्धश्च करुणा साक्षात्कल्किश्चित्तस्य हर्षतः।**
**कृष्णः शृंगाररूपश्च वृंदावन विभूषणः ॥**
**एते चांशकलाः सर्वे रामस्तु भगवान् स्वयम् ।**

अर्थ - श्रीराम के हृदय से मत्स्यावतार होता है उनके योगरूप ही जनार्दन भगवान हैं और कूर्मावतार रामजी के आधार शक्ति हैं वाराह भगवान् दोनों भुजा के बल हैं, नरसिंह रामजी के महाक्रोध हैं और वामनजी कटिभाग से, परशुरामजी दोनों जंघाओं से हुये हैं, बलरामजी रामजी के पीठ से हुए हैं और बुद्ध भगवान(गया जी वाले) रामजी की साक्षात करुणा हैं और कल्कि चित्त के हर्ष से हुये हैं और श्रीकृष्णभगवान् जो वृंदावन में विभूषित हैं, वे श्रीरामजी के शृंगाररूप हैं । ये सब अवतार अंश और कला मात्र हैं और श्रीरामचन्द्रजी ही स्वयं भगवान हैं ॥

भाव - दंडकवनवासी ऋषियों के लिये शृंगार अवतार धारणकर के सब गोपियों को सुख दिया यह कथा विस्तारपूर्वक महारामायण में और आदि रामायण में वर्णन की है ये सब अंश एवं कला अवतार हैं और रामजी तो स्वयं भगवान् हैं । इसके अलावा भी शिवसंहिता के पंचम पटल २ अध्याय में ऐसा कहा है कि

**'अयोध्यापतिरेव स्यात्पतीनां पतिरीश्वरः ।**
**अन्येषां मथुरादीनां रामांशाः पतयो यतः ॥**
**अवतारास्तु बहवः कला अंशा विभूतयः ।**
**रामो धनुर्धरः साक्षात्सर्वेशो भगवान् स्वयम् ॥**
**भोगस्थानपराऽयोध्या लीलास्थानं त्विदं भुवि।**
**भोगलीलापती रामो निरंकुशविभूतिकः ॥**
**भोगस्थानानि यावंति लीलास्थानानि यानि च ।**
**तानि सर्वाणि तस्यैव पुरो व्याप्यानि सर्वशः ॥**
**सबाह्याभ्यंतरं कृत्स्न आनन्दरसस्यन्दितः ।**
**मधूदधिरिवापारो राम एव परः पुमान् ॥**

अर्थ - शिव जी पारवती जी से कहते हैं कि अयोध्यापति राम जी ही पतियों के पति ईश्वर हैं, दूसरे मथुरादि के पति कृष्णादिक स्वरूप सब रामजी के अंश हैं। कला अंश विभूति वाले अवतार तो बहुत हैं और धनुर्धर श्रीरामजी ही साक्षात् सर्वेश्वर स्वयं भगवान् हैं । भोगस्थान में परा अयोध्यापुरी है और लीलास्थान भूमण्डल में यह अयोध्यापुरी है श्रीरामजी भोग और लीला दोनों अयोध्या पुरी के पति हैं और दोनों अयोध्या के ऐश्वर्य अखण्ड हैं। भोगस्थानों में जितने विभव हैं लीलास्थानों में भी वही हैं वही सब ऐश्वर्य ही अयोध्यापुरी में सर्वत्र व्याप्त हो रहे हैं। सर्वानंदरसरूप द्वारा अयोध्या पूरित है और मधुसागर के समान अपार है जिसमें परात्पर पुरुष एक रामजी ही हैं दूसरा नहीं इसके अतिरिक्त भी उसी शिवसंहिता में लिखा है। यथा-

**शिवसंहिता**

**द्विभुजो जानकीजानिः सदा सर्वत्र शोभते।**
**भक्तेच्छातो भवेदेष वैकुण्ठे तु चतुर्भुजः ॥**
**कल्पितं चापरं रूपं नित्यं द्विभुजमेव तत्।**
**परमं रससंपन्नं ध्येयं योगविदां वरैः ॥**

अर्थ - जानकीजीवन श्रीरामजी सदा द्विभुजस्वरूप से शोभा देते हें और भक्तों की इच्छा के अनुरूप वह चतुर्भुज नारायण वैकुंठवासी हुये हैं। और सब रूप केवल भक्तों के लिये प्रभु ने कल्पना किया है यथा "उपासकानां कार्यार्थं ब्रह्मणो रूपकल्पना' इस श्रुति अनुसार द्विभुजस्वरूप नित्य है वह परम रसमय है सब

योगियों द्वारा उस पर ध्यान किया जाता है। इसके अतिरिक्त अगस्त्यसंहिता में लिखा है कि २४ चौबीसों अवतार श्रीरामजी के सामने हाथ जोड़े खड़े हैं जहाँ जिसको श्रीरामजी की आज्ञा होती है सो अवतार लेकर सम्पूर्ण कार्य करके फिर साकेत लोक में रामजी के सामने पहुंच जाते हैं यह सिद्धांत अगस्त्यजी ने सुतीक्ष्णजी से कहा है वही तुम्हें सुनाता हूँ एक समय सब ऋषि मुनि लोग रामनवमी के दिन अयोध्याजी में आये और सरयू में स्नान कर संध्योपासनादि नित्यकर्म करके सब ऋषियों ने नारद जी से प्रश्न किया कि परब्रह्म श्रीरामजी का यथार्थ स्वरूप क्या है वह कहिये ! तब परमतत्त्व के ज्ञाता श्रीनारदजी बोले। यथा

**श्रीकौशलस्वरूपं च श्रोतव्यं भावसंयुतम् ।**
**येऽवताराः समाख्यातास्तस्मिंस्तस्तस्मिन् युगे युगे ॥**
**साकेतवासीपुरुषात्तथा तज्ज्ञातिभेदतः ।**
**संभवति सदा ते वै ह्यवतारा न संशयः ॥**
**सावधानेन तत्सर्वं शृणुध्वं ब्राह्मणा शुभम् ।**
**साकेताहं सतोत्पन्नो हंसो ज्ञानेन सागरः ॥**
**कुमारं बोधयामास विज्ञानार्थं सुनिश्चितम् ।**
**श्रीसाकेतनिवासिनां कुमारेभ्यः सदा मुने ॥**
**सनकाद्याः समुद्भूता वेदवेदांगपारगाः ।**
**श्री साकेतस्थ विप्रेण वामनेन सहस्रशः ॥**
**वामनाख्याऽवतारास्तु संभवंति युगे युगे ।**
**विमला नरसिंहाभ्यां नृसिंहो जायते सदा ॥**
**स्वभक्तरक्षणार्थाय कल्पे कल्पे न संशयः ।**
**श्रीकृष्णाद्यावताराणां संख्या कर्तुं न शक्यते ॥**
**धर्मसंस्थापनार्थाय संभवन्ति युगे युगे ।**

अर्थ - नारदजी बोले कि श्रीरामजी की परात्परता को श्रवण करो क्योंकि यह सुनने योग्य है , जितने अवतार विख्यात हैं और जिस जिस युग में होते हैं वह सब साकेतवासी पुरुषों के अंश से तथा जितने जाति भेद से निश्चय करके सर्वदा सब अवतारः उत्पन्न होते हैं इसमें संदेह नहीं। नारदजी बोले कि हे ब्राह्मणों ! आप सब सावधान होकर सुनो। श्रीसाकेत में ज्ञान के सागर परमहंस उत्पन्न होते रहते हैं और कुमारों को ज्ञानबोध कराते हैं। श्रीसाकेतनिवासी कुमारों से सर्वदा वेदवेदांग के जाननेवाले सनकादि चारों भाई उत्पन्न हुये हैं। श्रीसाकेतवासी विप्रों

से हजारों वामन प्रकट होते हैं। वामनावतार युग युग में होते हैं उसी प्रकार हजारों नृसिंह से नृसिंह अवतार अपने भक्तरक्षार्थ कल्प कल्प में होते हैं। कृष्णादि अवतारों की गिनती ही नहीं कर सकते हैं सब धर्मसंस्थापनार्थ युग युग में उत्पन्न होते हैं। हे शिष्य ! इसके आगे और भी विस्तार से वर्णन किया है कि साकेतलोक में हजारों परशुराम हैं, हजारों विष्णुनारायण के अवतार राम हैं, हजारों मत्स्यावतार हैं, कूर्मावतार हैं, बौद्धावतार हैं, वाराहअवतार हैं, कल्की अवतार हैं, हजारों नारायण हैं, विष्णु हैं, ब्रह्माजी हैं, शिवजी हैं, महा विष्णु हैं, महा शंभु हैं कहने का अर्थ यह की कुछ संख्या ही नहीं है और ये सब श्रीरामजी के सामने हाथ जोडे खडे हैं। हे शिष्य ! यही सिद्धांत प्रहलादजी के अवतार कबीरजी का भी है कि

**सब अवतार जासु महिमंडल अनंतखडो कर जोरे।**
**अद्भुत अगम अथाह रचोहे ई सब सोभा तोरे॥**

जहां सतगुरु खल ऋतु वसंत। तहं परम पुरुष सब साधु संत॥ वह तीनलोकते भिन्न राज॥ तह अनहद धुन चहुं पास बाज॥ दीपक बरे जहं निराधार॥ विरला जन कोई पाव पार॥ जहं कोटि कृष्ण जोरे दुहाथ॥ जहं कोटि विष्णु नावे सुमाथ॥ जहँ कोटि ब्रह्मा पढें पुराण॥ जहँ कोटि महादेव धरे ध्यान॥ जँह कोटि सरस्वती करै गान॥ जँह कोटि इन्द्र गावने लाग॥ जहँ गण गन्धर्व मुनि गनि जाहिं॥ सो तहंवा प्रगट आपु आहिं॥ तँह चोवा चन्दन अरु अबीर॥ तह पुहुप वास भरि अति गंभीर॥ जँह सुरति सुरंग सुगन्ध लीन॥ सव वही लोक मै बास कीन्ह। मैं अजरदीप पहुंचो सुजाइ॥ तँह अमर पुरुष के दरश पाइ॥ सो कह कबीर हृदया लगाइ॥ यह नरक उधारन नाम जाइ॥" ऐसा कहा है और गोस्वामी जी के रामायण में भी यही सिद्धांत है। यथा- "राम काम शत कोटि सुभग तन। दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन॥ शक्र कोटि शत सरिस विलासा। नम शतकोटि अमित अवकासा॥ मरुत कोटि शत विपुल बल, रविशत कोटि प्रकाश। शशि शतकोटि सुशीतल, शमन सकल भवनास॥ काल कोटि शत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत। धूम केतु शत कोटि सम, दुराधर्ष भगवन्त॥ प्रभु अगाध शतकोटिपताला। शमन कोटि शत सरिस कराला॥ तीरथ अमित कोटि शत पावन।नाम अखिल अध पूग नशावन॥ हिमगिरि कोटि अचल रघुवीरा। सिन्धु कोटि शत सम गंभीरा॥ कामधेनु शत कोटि समाना सकल काम दायक

भगवाना। शारद कोटि अमित चतुराई॥ विधि शत कोटि सृष्टि निपुनाई। विष्णु कोटिशत पालन कर्ता॥ रुद्र कोटि शत सम संहर्ता। धनद कोटि शत सग धनवाना॥ माया कोटि प्रपंच निधाना। भारधरन शतकोटि अहीशा॥ निरवधि निरुपम प्रभु जगदीशा। निरुपम न उपमा आन रामसमान राम निगम कहे॥ जिमि कोटि शत खद्योत सम रवि कहत अति लघुता रहे॥" ऐसा कहा है इसलिए रामजी के समान रामजी ही हैं ऐसा वेद कहता है दूसरी उपमा नहीं है। यदि मूर्खता से कोई रामजी के समान दूसरे को कहे तो यह उसका अज्ञान है

"जैसे असंख्य कोटि जुगुनू के समान सूर्य को कहना तुच्छ है" यह जानना चाहिए फिर भी कहा है यथा "**राका रजनी भगति तव, रामनाम सोइ सोम॥ अपर नाम उडगन विमल, वसहु भगत उर व्योम।**" ऐसा कहा है इसलिए गोस्वामीजी का भी सिद्धांत वही है जो कि पूर्व ही कह आये हैं यही बात फिर सदा शिवसंहिता में शेष जी ने वेद से कहा है। यथा

**भानुकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिप्रमोदकम्।**
**इन्द्रकोटिसदामोदं वसुकोटिवसुप्रदम्॥**
**विष्णुकोटिप्रतीपालं ब्रह्मकोटिविसर्जनम्।**
**रुद्रकोटिप्रमर्दं वै मातृकोटिविनाशनम्॥**
**भैरवकोटिसंहारं मृत्युकोटिविभीषणम्।**
**यमकोटिदुराधर्षं कालकोटिप्रधावकम्॥**
**गंधर्वकोटिसंगीतं गणकोटिगणेश्वरम्।**
**कामकोटिकलानाथं दुर्गाकोटिविमोहनम्॥**
**सर्वसौभाग्यनिलयं सर्वानन्दैकदायकम्।**
**कौशल्यानंदनं रामं केवलं भवखण्डनम्॥**

अर्थ - रामचंद्रजी कोटि सूर्य के समान प्रकाश करने वाले हैं, कोटि चन्द्र के समान आनन्द (शीतल) देने वाले हैं, कोटि इन्द्र के समान सदा आनंद लेने वाले हैं, कोटि वसु के समान द्रव्य को देनेवाले हैं, कोटि विष्णु के समान पालन कर्त्ता हैं, कोटि ब्रह्मा के समान सृष्टिकर्त्ता हैं, कोटि शिव के समान संहारकर्ता हैं, कोटि मातृ के समान नाशकर्त्ता हैं, कोटि भैरव के समान संहारकर्ता हैं, कोटि मृत्यु के समान सबका भक्षण करनेवाले हैं, कोटि यम के समान भयंकर हैं, कोटि काल के समान दौड़ने वाले हैं, कोटि गंधर्व के समान गानविद्या में निपुण हैं, कोटि गण

के समान गणेश्वर (गणेश) हैं, कोटि काम के समान कलानाथ हैं, कोटि दुर्गा के समान विमोहित करने करने वाले हैं, सर्व सौभाग्य के स्थान , सर्व आनंद के देनेवाले हैं, केवल कौशल्यानंदन श्रीरामजी ही इस संसार का जन्म मरण और नाश करने वाले हैं। हे शिष्य ! **शिवसंहिता** में लिखा है कि विष्णु नारायण कृष्णादि सब अवतार रामनाम को जपते हैं और हाथ जोड़े सामने खड़े हैं यथा-

**शिवसंहितायां पंचमपटले द्वितीयाध्याये श्रीशिव उवाच पार्वती प्रति -**

**आसीनं तमयोध्यायां सहस्रस्तंभमण्डिते ।**
**मण्डपे रत्नसंज्ञे च जानक्या सह राघवम् ॥**
**मत्स्यकूर्मकिर्य्यनेकौ नारसिंहोऽप्यनेकधा ।**
**वैकुंठोऽपि हयग्रीवो हरिः केशववामनौ ॥**
**यज्ञो नारायणो धर्मपुत्रो नरवरोऽपि च ।**
**देवकीनन्दनः कृष्णो वासुदेवो बलोऽपि च ॥**
**पृश्निगर्भो मधून्माथी गोविंदो माधवोऽपि च ।**
**वासुदेवो परोऽनन्तः संकर्षण इरापतिः ॥**
**प्रद्युम्नोऽप्यनिरुद्धश्च व्यूहास्सर्वेऽपि सर्वदा ।**
**रामं सदोपतिष्ठन्ते रामादेशे व्यवस्थिताः ॥**
**एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामो नाम महेश्वरः ।**
**तेषामैश्वर्यदातृत्वात्तन्मूलत्वान्निरीश्वरः ॥**

अर्थ - श्री साकेतपुरी अयोध्याजी में हजारों खंभों से शोभित रत्नमण्डप में जानकीजी के सहित रामजी विराजमान रहते हैं और अनेकों मत्स्य, अनेकों कूर्म, अनेकों वाराह, अनेकों नरसिंह ,अनेकों वैकुण्ठ भगवान, हयग्रीव, हरि, केशव, वामन, यज्ञ नारायण, धर्म पुत्र नरश्रेष्ठ भी और देवकी पुत्र कृष्णजी, वासुदेव, बलदेव भी और पृश्निगर्भ, मधुसूदन, गोविंद, माधव भी और वासुदेव भगवान भी , प्रभु अनंत, संकर्षण, लक्ष्मीपति, प्रद्युम्न भी, अनिरुद्ध सहित सारे चतुर्व्यूह सर्वदा श्रीरामजी के सामने खड़े रहते हैं, आज्ञा में स्थित हैं जिनको जो रामजी की आज्ञा होती है वही वे सब करते हैं और अन्य सब श्रीराम नाम रुपी महा ईश्वर की सेवा करते हैं ॥

भाव - सब कोई रामनाम जपते हैं उन सब स्वरूपों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाले परब्रह्म श्री रामजी सबके मूल कारण हैं और रामजी के ईश्वर कोई नहीं हैं ॥
भाव - रामजी प्रथम कहे हुए सबके ईश्वर हैं इसी कारण रामजी से परे कुछ भी नहीं है ॥
इसके अतिरिक्त भी शिव जी कहते हैं - यथा -

**इन्द्रनामा स इन्द्राणां पतिस्साक्षी गतिः प्रभुः ।**
**विष्णुस्स्वयं स विष्णूनां पतिर्वेदांतकृद्विभुः ॥**
**ब्रह्मा स ब्रह्मणां कर्त्ता प्रजापतिपतिर्गतिः ।**
**रुद्राणां स पती रुद्रो रुद्रकोटिनियामकः ॥**
**चन्द्रादित्यसहस्राणि रुद्रकोटिशतानि च ।**
**अवतारसहस्राणि शक्तिकोटिशतानि च ॥**
**इन्द्रकोटिसहस्राणि विष्णुकोटिशतानि च ।**
**ब्रह्मकोटिसहस्राणि दुर्गाकोटिशतानि च ॥**
**महाभैरवकल्याणी कोट्यर्बुदशतानि च ।**
**गंधर्वाणां सहस्राणि देवकोटिशतानि च ॥**

अर्थ - श्री रामजी ही इन्द्रनाम से सब इन्द्रों के पति हैं, साक्षी हैं, गति हैं, प्रभु हैं, फिर "वही रामजी स्वयं विष्णु हैं और सभी विष्णुओं के पति हैं, वेदांतशास्त्र के कर्त्ता एवं सर्वसमर्थ हैं। वही रामजी स्वयं ब्रह्मा हैं और सब ब्रह्माओं के कर्त्ता हैं ,प्रजापतियों के पति और उनकी एकमात्र गति हैं, फिर वही रामजी रुद्र हैं सब रुद्रों के पति हैं ,कोटि रुद्रों के नियामक हैं। हजारों चन्द्र, सूर्य, सैकड़ों कोटि शिव के समान रामजी हैं, हजारों कोटि अवतार के समान हैं, सौ कोटि शक्ति के समान हैं। हजारों कोटि इन्द्र के समान हैं, सौ कोटि विष्णु के समान हैं, हजारों कोटि ब्रह्मा के समान हैं, सौ कोटि दुर्गा के समान हैं। शिवजी कहते हैं कि हे कल्याणि ! सौ कोटि अर्बुद महाभैरव के समान रामजी हैं। रामजी हजारों गंधर्व एवं सौ कोटि देवताओं के समान हैं। हे शिष्य ! आगे शिव जी कहते हैं -

**वेदाः पुराणशास्त्राणि तीर्थकोटिशतानि च ।**
**देवत्रमहर्षीणां कोटिकोटिशतानि च ॥**
**निर्मत्सरैश्च विद्वद्भिर्मन्त्रार्थप्रयतैरपि ।**
**प्रोच्यंते यानि तान्येव रामांशाद्ब्रह्मवादिभिः ॥**
**यं वेदांतविदो ब्रह्म वदन्ति ब्रह्मवादिभिः ।**

**परमात्मेति योगीन्द्रा भक्तास्तु भगवानिति ॥**
**सभां यस्य निषेवंते स श्रीराम इतीरितः ।**

अर्थ - ४ वेद १८ पुराण ६ शास्त्र एवं सौ कोटि तीर्थ के समान पवित्र रामनाम है। देवर्षि ब्रह्मर्षि महर्षियों के सैकड़ों सैकड़ों कोटि के समान मंत्रार्थ प्रतिपादन करने में रामजी विद्वान हैं और निर्मत्सर हैं, पूर्वोक्त जो सब कहे हैं वह सब रामजी के अंश से हैं ऐसा ब्रह्मवादी सब कहते हैं। जिनको वेदांत ज्ञाता ब्रह्मवादी लोग परब्रह्म कहते हैं उन्हीं को योगी लोग परमात्मा कहते हैं और भक्त सब भगवान ऐसा कहते हैं जिनको नारायण विष्णु कृष्णादिक अवतार सब सेवा करते हैं वह श्रीराम हैं ऐसा कहते हैं। श्रीरामजी के समान परत्व किसी का नहीं है यह निश्चय है इसमें पक्षपात समझना अथवा संदेह करना वृथा है ऐसा ही **महाशंभु संहिता में, अगस्त्य संहिता में, शेष संहिता में, भरद्वाज संहिता मे, वसिष्ठ संहिता में, सुन्दरी तंत्रादि** में वर्णन है केवल ग्रंथ विस्तार होने के भय से नही लिखते हैं थोड़े ही में जानलो।

प्रश्न - हे स्वामी जी ! अब आप कृपाकर के श्री साकेतलोक का वर्णन कीजिये कि वह कहाँ है और कैसा है ? सो विस्तार से कहिये मुझे सुनने की बहुत इच्छा है।

उत्तर - हे शिष्य ! एक दिन वेद को संदेह हुआ कि सबसे परात्पर रूप, लीला, धाम, नाम कौन है इस बात को निर्णय करने के लिये सब जीवों के आचार्य जो शेष जी हैं उनसे पूछा गया तो अनंत शेष जी ने उत्तर दिया।

यथा - **सदाशिव संहितायाम्**

**महर्लोकः क्षितेरूर्ध्वमेककोटिप्रमाणतः ।**
**कोटिद्वयेन विख्यातो जनलोको व्यवस्थितः ॥**
**चतुष्कोटिप्रमाणस्तु तपोलोको विराजितः ।**
**उपरिष्टात्ततः सत्यमष्टकोटिप्रमाणतः ॥**
**आपः प्रव्याप्तकौमारः कोटिषोडशसंभवः ।**
**तदूर्ध्वं परिसंख्यातो ह्युमालोकस्सुनिष्ठितः ॥**
**शिवलोकस्तदूर्ध्वन्तु प्रकृत्या च समागतः ।**

**विश्वस्य पुरतो वृत्तिः शिवस्य पुरतो वहिः ॥**
**एतस्माद्बहिरावृत्तिः सप्तावरणसंज्ञकः ।**

अर्थ - पृथिवी से ऊपर महर्लोक एक कोटि कोश प्रमाण है और जनलोक दो कोटि कोश विख्यात है, तपलोक चार कोटि कोश प्रमाण है, उससे ऊपर ब्रह्मा जी के स्थान सत्यलोक आठ कोटि प्रमाण से है। जल से व्याप्त वहां से कुमार लोक ऊपर षोडश कोटि कोश पर शोभित है, उससे ऊपर पूर्वोक्त संख्या करके युक्त उमालोक है, उससे ऊपर शिवलोक है, प्रकृति से मिला हुआ है संसार के भीतर अर्थात प्रकृति के भीतर और शिवलोक से बाहर इससे भीतर सप्तावरण स्थित है॥

भाव - शिव लोक और उमालोक दोनों के मध्य सामान्य सप्तावरण है यहां से ऊपर सप्तावरण कहाँ तक है ये बताया गया है। यथा

**तदूर्ध्वं कोटिपंचाशत्क्रमाद्दशगुणात्परम् ।**
**भूमिरापोऽनलो वायुः खमहं च त्रिधापरम् ॥**
**महामूलेन प्रकृतेः सप्तावरणसंज्ञकः ।**
**तदूर्ध्वं सर्वसत्त्वानां कार्यकारणमानिनाम् ॥**
**निलयं परमं दिव्यं महावैष्णवसंज्ञकम् ।**
**शुद्धस्फटिकसंकाशं नित्यस्वच्छमहोदयम् ॥**
**निरामयं निराधारं निरंबुधिसमाकुलम् ।**
**भासमानं स्ववपुषा वयस्यैश्च विजृंभितम् ॥**
**मणिस्तंभसहस्रैस्तु निर्मितं भवनोत्तमम् ।**
**वज्रवैदूर्यमाणिक्यैर्ग्रथितं रत्नदीपकम् ॥**
**हेमप्रासादमावृत्य तरवः कामजातयः ।**

अर्थ - इसके ऊपर पचास कोटि योजन क्रम से दशगुण एक से एक परे पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण, विधाहंकार है, महामाया मूलप्रकृति पर्यंत सप्तावरण है, ब्रह्माण्ड यहीं तक है। इसके ऊपर सब जीवों के आदिकारण भगवान नारायण का धाम जहां से समस्त ब्रह्माण्ड का पालन पोषण होता है वह परम दिव्य महा वैकुंठ लोक है जो शुद्धस्फटिक के

तुल्य प्रकाशमान, नित्य स्वच्छ, महाकांतियुक्त, माया से रहित निराधार केवल शून्याकार में विराजमान चारों ओर जल प्रवाह से युक्त अपने शरीर के तेज से प्रकाशमान ऐसा वैकुण्ठ है जिसमें हजारों मणिस्तम्भों से निर्मित उत्तम भवन हैं जिनकी अलौकिक शोभा है, जहां वज्रमणि वैदूर्य्य (मूंगा )रत्नों से जड़ित दीपक हैं, स्वर्ण के चारों तरफ कोट है और बड़े बड़े महल शोभित हैं जहां चारों ओर कल्प वृक्ष शोभित है।

**रत्नकुण्डैरसंख्यातपुरुपैर्मलयवासिभिः।**
**स्त्रीरत्नैः परमाह्लादैः संगीतध्वनिमोदितैः॥**
**स्तुतं च सेवितं रम्यं रत्नतोरणमण्डितम्।**
**कारुण्यरूपं तन्नीरं गंगा यस्माद्विनिःसृता॥**
**अनन्तयोजनोच्छ्रायमनन्तयोजनायतम्।**
**यत्र शेते महाविष्णुर्भगवाञ्जगदीश्वरः॥**
**सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात्।**
**यन्निमेषाज्जगत्सर्वं लयीभूतं व्यवस्थितम्॥**
**इन्द्रकोटिसहस्राणां ब्रह्मणां च सहस्रशः।**
**उद्भवंति विनश्यंति कालज्ञानविडंबनैः॥**
**यदंशेन समुद्भूता ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।**
**कार्यकारणसंपन्ना गुणत्रयविभावकाः॥**
**यत्र आवर्तते विश्वं यत्रैव च प्रलीयते।**
**तद्वेदापरमं धाम मदीयं पूर्वसूचितम्॥**
**एतद्ब्रह्म समाख्यातं ददातु वाच्छितं हि नः।**

अर्थ - वहां असंख्य रत्नकुण्ड हैं, सभी पुरुष जहाँ मलयसुगंध से युक्त हैं, जहां हजारों स्त्रीरत्नों द्वारा परमानन्द हो रहा है सबके गीतध्वनि से चारों ओर परिपूरित आनंद उमड़ रहा है। स्तुति और सेवा से युक्त अतिसुन्दर तोरण द्वारा शोभित हो रहा है। जो भगवान महाविष्णु जी की करुणारुपी नीर से निकली हैं, वह गंगाजी अनन्त योजन ऊंची और अनंत योजन चौड़ी हैं, जहां संपूर्ण संसार के ईश्वर महाविष्णु भगवान् सोते हैं, जिनके हजारों शिर हैं, हजारों नेत्र हैं, हजारों चरण हैं, समस्त संसार जिनकी आत्मा है, जिनके निमेषमात्र से संपूर्ण संसार नाश होते हैं और उत्पन्न होते हैं, हजारों इन्द्र एवं हजारों ब्रह्मा उत्पन्न होते हैं, नाश होते हैं, कालज्ञान पाकर जिनके अंश से ब्रह्मा, विष्णु, महादेव सब उत्पन्न होते हैं। कार्य

कारण युक्त तीनों गुणों का विभाग करनेवाले हैं, जहां से संसार उद्भूत होते हैं और जहां पर फिर लय हो जाते हैं l हे वेद ! वही परमधाम मैंने पूर्व सूचित किया है यह गुप्त भेद का आख्यान करना मनोवांछित फल को देने वाला है l

**तदूर्ध्वं तु परं दिव्यं सत्यमन्यद्व्यवस्थितम् ।**
**न्यासिनां योगिनां स्थानं भगवद्भावनात्मनाम् ॥**
**महाशंभुर्मोदतेऽत्र सर्वशक्तिसमन्वितः ।**
**तदूर्ध्वं तु परं कान्तिम महावैकुंठसंज्ञकम् ॥**
**वासुदेवादयस्तत्र विहरन्ति स्वमायया ।**
**राघवस्य गुणो दिव्यो महाविष्णुस्वरूपवान् ॥**
**वासुदेवो घनीभूतस्तनुतेजो महाशिवः ।**
**तदूर्ध्वं तु स्वयं भातो गोलोकः प्रकृतेः परः ॥**
**वामनो गोचरातीतो ज्योतिरूपः सनातनः ।**

अर्थ - उसके ऊपर परमदिव्य ज्योतिरूप निराधार सत्यलोक स्थित है जहां सन्यासियों के, योगियों के, हरि भक्तों के स्थान हैं यहाँ महाशम्भु सर्वशक्तियों से युक्त होकर आनन्द करते हैं l उसके उपर परमदिव्य कांति से युक्त महावैकुण्ठ लोक है जहाँ वासुदेवादि चतुर्व्यूह अपनी माया द्वारा विहार करते हैं l पूर्वोक्त कहे गए महाविष्णुजी रामजी के दिव्य गुण हैं, वासुदेव भगवान् रामजी के घनीभूत ऐश्वर्य हैं और शरीर के तेज महाशिव हैं। इसके ऊपर ५०० कोटि योजन पर माया से परे, अप्राकृत गोलोक धाम है जो कि स्वयं प्रकाशमान है और मन, वचन, इंद्रियों से परे है, ज्योतिरूप सनातन है ॥

**तस्य मध्ये पुरं दिव्यं साकेतमिति संज्ञकम् ।**
**योपिद्रत्नमणिस्तंभप्रमदागणसेवितम् ॥**
**तन्मध्ये परमोदारः कल्पवृक्षो वरप्रदः ।**
**तस्याऽधः परमं दिव्यं रत्नमण्डपमुत्तमम् ॥**
**तन्मध्ये वेदिका रम्या स्वर्णरत्नविनिर्मिता ।**
**तन्मध्ये च परं शुभ्रं रत्नसिंहासनं शुभम् ॥**
**सहस्रारं महापद्मं कर्णिकारैस्समुत्तमम् ।**
**तन्मध्ये मुद्रिकाभिन्नं मुद्राद्वाभ्यां विभिन्नकम् ॥**

**वह्नीन्दुमण्डलेनापि वेष्टितं बिंदुभूषितम् ।**
**चन्द्रकोटिप्रतीकाशं छत्रकं च सचामरम् ॥**
**सदाऽमृतघनस्त्रावि मुक्तादामवितानकम् ।**

अर्थ - उस गोलोक के मध्य में परमदिव्य साकेतपुरी है जो कि मणियों से रचित है और स्त्रीरत्नों से सेवित है, उसके मध्य में परम उदार (श्रेष्ठ) वर को देने वाला कल्पवृक्ष है उस कल्पवृक्ष के नीचे परम दिव्यरत्नों से बना हुआ उत्तम मण्डप है, उस मण्डप के मध्य में स्वर्ण रत्नों से रचित अति सुन्दर एक वेदिका है, उस वेदी के मध्य में अत्यन्त उज्ज्वल मंगलदायक रत्नसिंहासन है, उस पर हज़ारदल वाला महाकमल है, वह उत्तम कर्णिका से युक्त है l उसके बीच में एक गोलाकार मुद्रिका भिन्न है ,उसके निचले भाग में दो मुद्रा भिन्न हैं, वह अग्निमण्डल और चन्द्रमण्डल से वेष्ठित है और बिंदु से विभूषित हैं। कोटि चंद्रमा के समान छत्र और चामर शोभित है जिससे अमृत समान मेघ बरसते हैं और मुक्ता झालर से युक्त वितान (चांदनी) लगी है जिसकी शोभा अपार है।

**तन्मध्ये जानकी देवी सर्वशक्ति नमस्कृता ।**
**तत्रास्ते भगवान् रामः सर्वदेवशिरोमणिः ॥**
**तत्रादौ चिंतयेत्तेजो वह्निरूपं सशक्तिकम् ।**
**तेजसा महता श्लिष्टमानन्दैकाग्रमंदिरम् ॥**
**एकाग्रमनसा पश्येत्तत्र देवं सुविग्रहम् ।**
**स्निग्धंमिन्दीवरश्यामं कोटीन्दुललितद्युतिम् ॥**
**चिद्रूपं परमोदारं वीरभद्रं रघूद्वहम् ।**
**द्विभुजं मधुरं शांतं जानकीप्रेमविह्वलम् ॥**
**दोर्दण्डचण्डकोदण्डं शरच्चन्द्रमहाभुजम् ।**
**सीता लिंगितवामांगं कामरूपं रसोत्सुकम् ॥**
**तरुणारुणसंकाशं विकचांबुजपादकम् ।**
**पदद्वंद्वं नखश्चन्द्रः प्रियतेजस्समावृतम् ॥**
**कूर्मपृष्ठपदाभासं रणन्मंजीरपादकम् ।**
**कटिसूत्रांकितश्रीशं यज्ञसूत्रैरलंकृतम् ॥**
**रत्नकंकणकेयूरशोभिताग्रभुजद्वयम् ।**
**चन्द्रकोटिप्रतीकाशं कौस्तुभेन विराजितम् ॥**

अर्थ - उस सिंहासन के बीच में सर्वशक्तियों द्वारा नमस्कृत श्रीजानकी देवी हैं, वही पर समस्त देवताओं के शिरोमणि भगवान् श्रीरामजी हैं। वहाँ प्रथम में अग्निरूप 'सुंदर शक्ति के तेज का स्मरण करें, महान् तेज से युक्त आनंदरूप मंदिर में एकाग्र मन से सुंदर स्वरूप को देखें कि कैसे हैं - "स्निग्ध (चिकने) कोमल श्याम कमल रूप, कोटि चंद्रमाओं से भी सुंदर , प्रिय कांतियुक्त चिद्रूप, परम उदार, वीरभद्र रघुकुलशिरोमणि रामजी द्विभुज मधुरशांतस्वरूप हैं' श्रीजानकीजी के प्रेम में विव्हल हैं, उनके भुजदंड में प्रचण्ड 'धनुर्बाण हैं, शरदचंद्र जैसे महाभुज हैं, जिनके बायें अंग में सीता शोभित हैं, कामरूपरस को चाहनेवाले हैं, लाल कमल जैसे कांतियुक्त दोनों चरण हैं, दोनों चरणों के नख चंद्र के प्रिय प्रकाश से सारी दिशायें प्रकाशित हो रहीं हैं वह दो चरण कूर्म पृष्ठ पर कांतियुक्त मंजीर के शब्द से पूरित होकर शोभा दे रहे हैं । कटिसूत्र से शोभित 'और' यज्ञोपवीत से अलंकृत रत्न के कंगन हाथ में और केयूर (बाजू) से दोनों भुजा शोभित है और कोटि चन्द्रमातुल्य प्रकाशमान कंठ में कौस्तुभमणि शोभित है।

**दिव्यरत्नसमायुक्तं मुद्रिकाभिरलंकृतम् ।**
**नासांशैकसमायुक्तं मुक्ताफलस्फुरन्मुखम् ॥**
**सूर्यकोटिप्रतीकाशं चंद्रकोटिप्रमोदकम् ।**
**विद्युत्कोटिचलच्छुभ्रं कुण्डलादिश्रुतिद्वयम् ॥**
**प्रवृत्तारुणसंकाशं किरीटेन विराजितम् ।**
**गोविंद गोविदां श्रेष्ठं चिन्मयानंदविग्रहम् ॥**
**दिव्यायुधसुसंपन्नं दिव्याभरणभूषितम् ।**
**अक्षरं केवलं ब्रह्म पीतकौशेयवाससम् ॥**
**शंखचक्रगदापद्मचर्मासिहलमूशलैः ।**
**तद्रूप विविधाकारैः सेव्यमानं परात्परम् ॥**
**वशिष्ठवामदेवादिमुनिभिः परिसेवितम् ।**
**लक्ष्मणं पश्चिमे भागे धृतच्छत्रं सुचामरम् ॥**
**उभौ भरतशत्रुघ्नौ तालंवृतकराम्बुजौ ।**
**अग्रे व्यग्रं हनूमंतं वाचयंतं सुपुस्तकम् ॥**

अर्थ - दिव्यरत्न की मुद्रिका धारण किये हुये हैं और नासिका में मुक्ताफल (नाशामणि) है, हास्ययुक्त मुख है, कोटिसूर्य के समान प्रकाशमान, कोटिचन्द्रमाओं के समान आनंदरूप कोटि दामिनी के समान चंचल उज्ज्वल दोनों कान में 'कुण्डल हैं, तप्त कांचन से लाल शिर पर किरीट शोभित हैं, सर्व इंद्रियों में व्याप्त गोविंद इंद्रियों से परे चिदानंद स्वरूप दिव्य आयुध करके युक्त दिव्य आभूषणों को धारण किये केवल अक्षर ब्रह्म ,पीताम्बर धारण किये और शंख, चक्र, गदा, पद्म, धर्म, ( ढाल) असि (खड्ग ), हल, मूसल धारण किये ऐसे बहुत प्रकार के स्वरूप से सेवित हैं।

भावः- हजारों विष्णु नारायणादि चतुर्भुज, अष्टभुजवाले अवतारों से रात्पर ब्रह्म रामजी सेवित हैं और वसिष्ठ वामदेवादि मुनियों द्वारा सेवित हैं पश्चिम भाग में लक्ष्मणजी छत्र चामर लिये खड़े हें, और भरत शत्रुघ्न दोनों ताल का पंखा हस्तकमल में लिये दक्षिण बायीं ओर को और रामजी के सामने हनुमानजी सुन्दर पुस्तक को बांचते हुए ऐसे चारों भाइयों का ध्यान करें । हे शिष्य ! ये साकेतवासी श्री रामजी के ध्यान का वर्णन किया है।

प्रश्न- स्वामीजी ! श्रीजानकी जी का परत्व कुछ कहिये मुझे सुनने की बहुत ही इच्छा है।

उत्तर - हे शिष्य ! श्रीजानकीजी का परत्व महारामायण में शंकरजी ने पार्वती जी से इस प्रकार बताया है :- यथा - प्रमाण

**संप्रवक्ष्यामि याश्शक्तीर्जानक्यांशास्त्रिंत्रिंशकाः ।**
**निकटे संस्थिता नित्यं सर्वाभरणभूषिताः ॥**
**श्रीर्भूलीला तथोत्कृष्टा क्रियायोगोन्नती तथा ।**
**ज्ञाना पार्वी तथा सत्या' कथिता चाप्यनुग्रहा ॥**
**ईशाना चैव कीर्तिश्च विद्येला कांतिलंबनी ।**
**चन्द्रिकापि तथाक्रूरा कान्ता वै भीषणी तथा ॥**
**क्षांता च नन्दनी शोका शांता च विमला तथा ।**
**शुभदा शोभना पुण्या कला चाप्यथ मालिनी ॥**
**महोदया ह्लादिनीः शक्तय एकादशत्रिकाः ।**
**भृकुटी दर्शयंतीमा जानक्या नित्यमेव च ॥**

अर्थ - शिवजी बोले कि श्रीजानकी जी की अंश जो ३३ शक्तियां हैं, उन्हें कहता हूँ सुनो, जानकी जी के समक्ष ये नित्य रहती हैं। श्री १, भू देवी २, लीला देवी ३, तथा उत्कृष्ट ४, क्रिया ५, योगा ६, उन्नती ७, ज्ञाना ८, पार्वी ९, तथा सत्या १०, अनुग्रहा ११, ईशाना १२, कीर्ति १३, विद्या १४, इला १५ कांति १६, लंबनी १७, चंद्रिका १८, तथा क्रूरा १९, कान्ता २०, भीषणी २१, क्षांता २२, नंदनी २३, शोका २४, शांता २५ और विमला २६, शुभदा २७, शोभना २८, पुण्या २९, कला ३०, और मालिनी ३१, महोदया ३२, आह्लादिनी ३३, यह तैतीस शक्ति श्रीजानकी जी की भुकुटी देखती रहती हैं और भृकुटि के देखाने से सब कोई अपने अपने कार्य को करती हैं।

आगे बताया गया है :-

**श्रीश्च श्रीः प्रेरका ज्ञेया भूरण्डाधार उच्यते।**
**लीला बहुविधा लीला उत्कृष्टोत्कर्षप्रेरका॥**
**क्रिया समक्रिया सम्यग्योगा योगान्विता गतिः।**
**उन्नती महती वृद्धिर्ज्ञाना विज्ञानप्रेरका॥**
**करोति प्रेरणं सम्यक पर्वी जयपराजयौ।**
**सत्यस्य प्रेरका सत्यानुग्रहार्था दयागुणाः॥**
**ये च सर्वे जगन्मध्ये भेदा अपि सुदुस्तराः।**
**ईशाना प्रेरका तेषां वर्तते नात्र संशयः॥**
**यशोऽधिकारिणी कीर्तिर्विद्या विद्याधिकारिणी।**
**सद्वाणी प्रेरकेला स्यात्क्रांता क्रांतिविवर्द्धिनी॥**
**यानि धामानि सर्वाणि श्रीरामस्याद्भुतानि च।**
**गुणाश्चानंतरूपाणि प्रेरकैषां विलंबिनी॥**
**शीतंप्रकाशयोस्सम्यक् प्रेरका चंद्रिकापि च।**
**क्रूरत्वं प्रेरका क्रूरा मनोवाक्कायकर्मभिः॥**
**प्रेरका वर्त्तते कान्ता रागमोहौ शुभाशुभौ।**
**प्रेरका भीषणी तेषां ये च सर्वे भयादयः॥**
**वर्त्तते प्रेरका क्षान्ता क्षमा गुणविशेषतः।**
**नंदनी च तथा शक्तिः सर्वानंदप्रकाशिनी॥**

अर्थ- संपूर्ण ब्रह्माण्ड में श्री की प्रेरणा करनेवाली श्रीदेवी शक्ति हैं १। ब्रह्माण्ड की आधार भूदेवी शक्ति हैं २। संपूर्ण लीला की प्रेरक लीला देवी हैं ३। सब उत्कर्ष की प्रेरक उत्कृष्टा शक्ति हैं ४। सम्पूर्ण क्रिया की प्रेरक क्रिया शक्ति हैं ५। अष्टांग योगादि की प्रेरक योगाशक्ति हैं ६। सकल वृद्धि की प्रेरक उन्नति शक्ति हैं ७। ज्ञान विज्ञान वैराग्यादि की प्रेरक ज्ञाना शक्ति हैं ८। जय पराजय की प्रेरक पर्वी शक्ति हैं ९। सत्य की प्रेरक सत्या शक्ति हैं १०। दयादिक गुण की प्रेरक अनुग्रहा शक्ति हैं ११। संपूर्ण दुस्तर भेदों की प्रेरक ईशाना शक्ति हैं १२। सुयश की प्रेरक कीर्ति शक्ति हैं १३। सम्पूर्ण विद्या की प्रेरक विद्या शक्ति हैं १४। सद्वाणी की प्रेरक इला शक्ति हैं १५। सर्व कांति की प्रेरक कांता शक्ति है १६। और तीन लोक चौदहों भुवन और १०८ वैकुण्ठ हैं सो सब श्रीरामजी के धाम हैं और भगवान के असंख्यगुण जो हैं और वे जितने रूप धारण करते हैं, अंश कला विभूति आवेशादि ये सभी विलंबनी शक्ति द्वारा प्रतिपादित किया जाता है १७। शीत प्रकाश की प्रेरक चंद्रिका शक्ति है १८। क्रूरा हैं अक्रूर परन्तु संपूर्ण क्रूरता की प्रेरक हैं सो क्रूरा शक्ति हैं १९। सब राग मोह शुभाशुभ की प्रेरक कान्ता शक्ति हैं २०। सकल भय की प्रेरक भीषण शक्ति हैं २१। क्षमागुण की प्रेरक क्षमा शक्ति हैं २२। आनन्द की प्रेरक नन्दिनी शक्ति हैं २३॥

**शोका स्वयं विशोका च लोकानां शोक प्रेरका।**
**शांतिप्रदायिनी शांता विमला विमलान् गुणान्॥**
**शुभदा सद्गुणं शोभां प्रेरयंती च शोभना।**
**पुण्यापुण्यगुणोपेता कला बहुकलावती॥**
**मालिनी व्यापकान्सर्वान्प्रेरयंती महोदयान्।**
**विभवं प्रकृतिर्भक्तिर्भक्ति वर्द्धयते सदा॥**
**आह्लादिनी महाऽऽह्लादं संवर्द्धयति सर्वदा।**
**स्वे स्वे कार्य्ये रतास्सर्वाश्शक्तयश्चैव तास्सदा॥**
**यस्मिन्काले भवेदाज्ञा सीतारामानुशासनम्।**
**तस्मिन्काले प्रकुर्वीत सर्वं कार्य्यमशेषतः॥**
**एकैकानां सहस्राणि वर्त्तते चोपशक्तयः।**
**व्यापकास्सर्वलोकेषु सर्वतो गगनं यथा॥**
**जानक्यंशादिसंभूताऽनेकब्रह्माण्डकारिणी।**
**सा मूलप्रकृतिर्ज्ञेया महामायास्वरूपिणी॥**

अर्थ - शोका शक्ति हैं अशोक परन्तु संपूर्ण ब्रह्माण्ड भर में शोक की प्रेरणा करती हैं २४ l शांति की प्रेरक शांता शक्ति हैं २५ l विमलगुण की प्रेरक विमला शक्ति हैं २६ l सद्गुण की प्रेरक शुभदा शक्ति हैं २७ l सुन्दरता की प्रेरक शोभना शक्ति हैं २८ l पुण्य की प्रेरक पुण्या शक्ति हैं २९ l सकलगुण और ६४ कला की प्रेरक कलावती शक्ति हैं ३० l सर्वत्र व्यापकता की प्रेरक मालिनी शक्ति हैं ३१ l और संपूर्ण विभव प्रकृति गुण के और भक्ति की प्रेरक भक्ति शक्ति हैं ३२ ll परम आह्लाद जो ब्रह्मानन्द है उसकी प्रेरक अह्लादिनी शक्ति हैं ३३ ll ये सब शक्ति अपने अपने कार्य में रत रहती हैं जिस काल में श्रीसीतारामजी की आज्ञा होती है उसी काल में सर्व शक्ति सर्व कार्य को विशेष पूर्वक करती हैं l इन सब शक्तियों की हजारों हज़ारों उपशक्ति अर्थात आज्ञा पालन करने वाली दासी हैं सो सब लोक में आकाश के समान व्याप्त हो रही हैं। और जानकीजी के अंश से जो उत्पन्न हुई हैं कोटि कोटि ब्रह्माण्ड को रचनेवाली वही मूल प्रकृति स्वरूप महामाया को जानना l हे शिष्य ! ऐसा श्रीजानकीजी का परत्व कहा है इससे श्रीजानकीजी के समान दूसरे को कहना मूर्खता है l

प्रश्न - हे स्वामीजी ! वाल्मीकि जी ने रामायण में कौन लोक लिखा है ? सो कहिये ll

उत्तर- हे शिष्य ! महर्षिजी ने सांतानिक लोक रामायण में लिखा है यथाः-

**तच्छरुत्वा विष्णुवचनं ब्रह्मा लोकगुरुः प्रभुः l**
**लोकान्सांतानिकान्नाम यास्यंती मे समागताः ll**
**यच्च तिर्यग्गतं किंचित्त्वामेवमनुचितयन् l**
**प्राणांस्त्यक्ष्यति भक्त्या वै तत्संताने विवत्स्यति ll**
**सर्वैर्ब्रह्मगुणैर्युक्ते ब्रह्मलोकादनंतरे l**

अर्थ - विष्णु भगवान के वचन सुनकर लोकपिता ब्रह्माजी बोले कि यह सब आपके भक्त सांतानिक नाम वाले लोकों में जांयेंगे l ये तो आपके साथ ही आये हैं परन्तु जो कोई कीट पतंग भी आपका नाम लेकर शरीर त्याग करेगें वे सब सान्तानिक लोकों में जांयेंगे l यह सान्तानिक लोक ब्रह्म गुण से युक्त ब्रह्मलोक

से मिला हुआ है यह ब्रह्मलोक साकेत ही है। ऐसा ही महाभारत में कहा है। यथा प्रमाण

**लोकान्सान्तानिकान्नाम भविष्यंत्यस्य भारत।**
**यतिधर्ममवाप्तोऽसौ नैव शोच्यः परंतप॥**

अर्थ - जिस समय में विदुरजी का देहांत हो गया है तब युधिष्ठिरजी दग्धकरने के लिए चले हैं उस समय में आकाशवाणी हुई है कि हे भारत ! इनको तो योगियों को भी दुर्लभ सर्वोपरि सांतानिकलोक प्राप्त होगा क्योंकि सन्यास धर्म प्राप्त रहा इसलिए दग्ध मत करो॥ यति को दग्ध करना दोष है और तुम शोच भी नहीं करो।

इससे प्रमाणित होता है कि सान्तानिक सर्वोपरि है ऐसा प्रधान वेद के तुल्य दोनों ग्रंथ रामायण और महाभारत में लिखा है। इससे परे लोक कोई भी नहीं है॥

प्रश्न - हे स्वामीजी ! साकेत लोक और सांतानिक लोक एक है कि दो है यह कहिये ? मेरे मन में बहुत ही संदेह है।

उत्तर - हे शिष्य ! जहां सांतानिक लता वन हैं उसको सांतानिक लोक कहते हैं, तो सांतानिक वन साकेत लोक ही में हैं।

**ऐसा सदाशिव संहिता में कहा गया है।**

**यथा सदाशिव संहितायाम्**

**साकेतदक्षिणद्वारे हनुमान रामवत्सलः।**
**यत्र सांतानिकनाम वनं दिव्यं हरेः प्रियम्॥**

अर्थ - साकेतपुरी के दक्षिणद्वार में भक्तवत्सल श्रीहनुमानजी रहते हैं जहां भगवान को प्रिय अति दिव्य सांतानिक वन है॥ ऐसा कहा है, फिर उसी सांतानिक वन को गोस्वामीजी ने शीतल अमराई कहा है यथा - हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई। गये जहां सीतल अँवराई॥ ये वचन शिवजी ने (प्रजासहित रघुवंश मनि, किमि गवने निज धाम ) इसके उत्तर में कहे हैं, इससे दूसरा अर्थ करना

विरुद्ध है यहां निश्चय सांतानिक वन ही इसका अर्थ है, इससे साकेत लोक ही गोस्वामीजी का सिद्धांत है, यही सिद्धान्त श्रीप्रहलादजी के अवतार कबीरजी का सिद्धान्त है। यथा- "छोडि नासूत मलूक जब रूज लाहूत हाहूत बाजी। और साहूत राहूत इहां डारि दे कूदि आहूत जाहूत जाजी ॥ जाय जाहूत में खुद खाविन्द जहँ वही मकान साकेत साजी। कहै कबीर हा भिस्त दोजख थके वेद किताब कातृत काजी ॥ ऐसा और नौ मोकाम के ऊपर साकेत कहा है फिर कबीरजी ने झूलना छंद पिंगल में विस्तार से नो मोकाम के ऊपर सत्यलोक कहा है कि (भये आनन्द से फन्द सब छोड़िया पहुंचिया जहां सतलोक मेरा ) ऐसा कहा है इससे सबके सिद्धान्त एक ही हैं।

(प्रश्न ) हे स्वामीजी ! सत्यलोक साकेत ही का नाम है कि दूसरा सत्यलोक है।

(उत्तर) हे शिष्य ! सत्यलोक ब्रह्मलोक को भी कहते हैं, परन्तु सिद्धान्त ग्रन्थ में साकेत ही के नाम से जानना चाहिये,

**क्योंकि शिवसंहिता पंचमपटल के २० अध्याय में कहा गया है। यथा**

**अयोध्या नंदनी सत्यनामा साकेत इत्यपि।**
**कोशला राजधानी च ब्रह्मपुराऽपराजिता ॥**
**अष्टचक्रा नवद्वारा नगरी धर्मसंपदाम्।**
**देवं ज्ञाननेत्रेण ध्यातव्या सरयूस्तथा ॥**

अर्थ - अयोध्या, नन्दनी, सत्या, साकेत, कोशला, ब्रह्मपुर, अपराजिता इतने नाम अयोध्याजी के हैं। आठ चक्र नौ द्वारवाली नगरी धर्मसम्पत्ति से युक्त है ऐसा ज्ञाननेत्र से देखकर ध्यान करना वैसी ही दिव्य श्रीसरयूज़ी है ॥

(प्रश्न ) हे स्वामीजी ! श्री अयोध्याजी का और श्रीसरयूजी का माहात्म्य भारी है। कुछ और भी कहिये।

(उत्तर) हे शिष्य ! अयोध्या सरयू की प्रशंसा क्या करें ग्रन्थ विस्तार हो जायगा इस भय से नहीं कहते हैं, जो कुछ है सो अयोध्या ही है।

**रासस्थानमयोध्यैव धर्मस्थानं सनातनम्।**
**मुक्तिस्थानमयोध्यैव भक्तिस्थानं च शाश्वतम् ॥**
**धर्मस्थानमयोध्याऽख्यं रंगमुक्तिपदं स्मृतम्।**
**द्वारिकाभक्तिकृत्स्थानं रसस्थानं तु माथुरम् ॥**

**सर्वमेतदयोध्यैव सूक्ष्मदृष्टिसमर्पणे।**
**तत्राशोकवनं रम्यं रसस्थानं हि केवलम्॥**
**तन्मध्ये जानकीरामौ नित्यं लीलारतौ स्थितौ।**
**सहितौ वनितायूथैः शतैरपि मनोहरैः॥**

अर्थ - शिवसंहिता के २० अध्याय में शिव वचन है कि रासस्थान अयोध्या ही है, धर्मस्थान सनातन है, मुक्तिस्थान अयोध्या ही है भक्तिस्थान सर्वदा अयोध्या ही है, धर्मस्थान अयोध्या ही है, रंगनाथजी मुक्ति के देनेवाले कहे हैं द्वारकापुरी भक्ति कृत्य स्थान है और मथुराजी रासस्थान है, यह सब अयोध्या ही से हैं, यदि ज्ञानदृष्टि देकर देखें तो अज्ञान से नहीं॥ जहां अतिरम्य अशोक वन हैं, केवलरसस्थान है उसके बीच में श्रीसीतारामजी दोनों नित्य लीला प्रीति करके स्थित हैं, हजारों स्त्री यूथों के मध्य दोनों विराजमान हैं, ऐसा कहा है, हे शिष्य ! अयोध्याजी के और सरयूजी का माहात्म्य वशिष्ठ संहिता में विस्तार से वर्णन किये हैं वहां अन्त में दो श्लोक इस प्रकार कहे गए हैं।

**यथा वशिष्ठ उवाच भरद्वाजं प्रति ८७ अध्याय**

**अयोध्यानगरी नित्या सच्चिदानंदरूपिणी।**
**यस्यांशांशेन वैकुंठा गोलोकादिप्रतिष्ठिताः॥**
**यत्र श्रीसरयू नित्या प्रेमवारिप्रवाहिनी।**
**यस्यांशांशेन संभूता विरजादिसरिद्वराः॥**
**पूर्णः पूर्णतमः श्रीमान्सच्चिदानंद विग्रहः।**
**अयोध्यां क्वापि संत्यज्य स क्वचिन्नैव गच्छति॥**

अर्थ - अयोध्या नगरी नित्य है, सच्चिदानन्दस्वरूप है, जिनके अंशों के भी अंश से सर्व वैकुण्ठ गोलोकादि प्रतिष्ठित हैं। जहां नित्य श्रीसरयूजी का श्रीराम प्रेम रूपी जल प्रवाहित होता रहता है॥ जिनके अंशांश से विरजादि नदियां प्रकट हुई हैं। सभी पूर्णावतारों में भी पूर्णतम अर्थात परिपूर्णतम परात्पर परब्रह्म श्रीमान् सच्चिदानन्दघन स्वरूप श्रीरामजी श्रीअयोध्याजी को छोड़कर कभी कहीं नहीं जाते हैं।

**याऽयोध्यापुरी सा सर्ववैकुण्ठानामेव मूलाधारा मूलप्रकृतेः परा, तत्सद्ब्रह्ममया विरजोत्तरा, दिव्यरत्नकोशाढ्यायां तस्यां नित्यमेवं सीतारामयोर्विहारस्थलमस्तीत्यथर्वणे श्रुतिः ॥ देवानां पुरर्ययोध्या तस्यां हिरण्मयः कोषः स्वर्गलोको ज्योतिषावृता यो वै तां ब्रह्मणे वेदामृतेन वृतां पुरी तस्मै ब्रह्म च ब्रह्मा च आयुः कीर्तिप्रजां ददुरितिसामवेदे तैत्तिरीयश्रुतिः ॥**

ऐसे ही हनुमत्संहिता तथा अगस्त्यसंहितादि में अयोध्या सरयू का माहात्म्य बहुत है। कोटि कोटि ब्रह्मा, विष्णु, शिव, नारायण, महाशंभु, महाविष्णु, कोटि कोटि कृष्णादिक चौबीसों अवतार अयोध्याजी के रज में तथा सरयूजी के बालुका में लोटते हैं और हाथ जोड़े खड़े रहते हैं । हे शिष्य ! कहां तक प्रमाण दें, जो कोई विष्णु नारायण के तथा कृष्ण जी के उपासक हैं, उनको भला यह सिद्धांत क्यों ही भावेगा । कृष्ण उपासक केवल गर्ग संहिता के भरोसे वाद विवाद करते हैं और यह नहीं जानते हैं कि एक संहिता कौन कहे, सैकडों संहिता रामजी के परत्व का प्रतिपादन करती हैं। विशेष देखना हो तो आदिपुराण देखो जहां स्वयं कृष्णजी ने अर्जुन को क्या सिद्धान्त कहा है, नहीं तो वेदार्थप्रकाश रामायण देखो और महारामायण में परम दयालु अनन्य रामोपासक श्रीशंकरजी ने रामजी के ४२ चरण चिह्नों से सब अवतार वर्णन किये हैं। फिर कालतन्त्र में काल और माया के संवाद में सर्व सिद्धान्त विषय में ऐसा कहा है कि - क्या करें ग्रन्थ विस्तार होने का भय है नहीं तो कुछ कहते फिर रुद्रयामल ब्रह्म यामल देखो जहां शिवजी ने रकार और मकार से ही सब वर्णन किया है फिर पुलस्त्य - संहिता देखो जहां रामनाम ही से सब कुछ वर्णन किया है विशेष क्या कहें
**"यह प्रसंग जाने कोउ कोऊ।"**

प्रश्न - हे स्वामीजी ! कबीर जी को प्रह्लाद का अवतार कहा है, यह कहां लिखा है ?

उत्तर - हे शिष्य ! इस कथा का अगस्त्यसंहिता के भविष्यखण्ड के १३१ अध्यायसे १३५ अध्याय तक वर्णन है। वहां स्वयंभू, नारद, शंभु ,सनकादि कुमार, कपिल, विभीषण, प्रह्लाद, जनक, भीष्म, बलि, शुकदेव, यमराज यह द्वादश वैष्णवों के सहित और लक्ष्मीजी के सहित रामजी अवतार धारण किये हैं जिन में प्रथम

श्रीरामजी प्रयाग राज में पुण्य सदन नामक कान्यकुब्ज ब्राह्मण व उनकी धर्मपत्नी सुशीला मैया के घर जन्म धारण किये और श्रीरामानंद स्वामी नाम से विख्यात हुये उनके प्रथम शिष्य ब्रह्माजी के अवतार अनन्तानंदजी। दूसरे शिष्य नारदजी के अवतार सुरसुरानंदजी हुये। तीसरे शिष्य शंकरजी के अवतार सुखानंदजी हुये। चौथे शिष्य सनत्कुमार के अवतार नरहर्यानंद जी हुये। पांचवें शिष्य कपिलजी के अवतार योगानंदजी हुये। छठे शिष्य मनुजी के अवतार पीपाजी राजा हुये। सातवें शिष्य प्रहलादजी के अवतार कबीरजी हुये। आठवें शिष्य जनकजी के अवतार भावानंदजी हुये। नौवें शिष्य भीष्मजी के अवतार सेना भक्त हुये। दसवें शिष्य बलिजी के अवतार धनाभक्त हुये। ग्यारहवें शिष्य शुकदेवजी के अवतार गालवानंद योगिराज हुए। बारहवें शिष्य यमराजजी के अवतार रमादास याने रैदासभक्त हुए। तेरहवीं शिष्या लक्ष्मीजी के अंश से पद्मावतीजी हुईं। यह सब चव्वालीस सौ वर्ष कलियुग बीतने पर हुये हैं, और जो जहां जिसकुल में जिस दिन मास पक्ष तिथि नक्षत्रादि में जन्म लिये हैं सो विस्तार से अगस्त्यजी ने सुतीक्ष्णजी से कहा है। हे शिष्य ! ये सब षडक्षररराममंत्र के आचार्य हुये हैं और सर्वत्र विजय करके राममंत्र का प्रचार किये हैं। जिन संप्रदाय में तुलसीदासजी जैसे अद्धितीय महात्मा हुये हैं और भी चारों धाम में साधुसमाज प्रसिद्ध है विशेष क्या कहें।

प्रश्न - स्वामीजी ! वाल्मीकीय रामायण में सर्वोपरि गोलोक धाम का नाम है कि नहीं ? यह कहिये।

उत्तर- हे शिष्य ! वाल्मीकीय रामायण अयोध्याकाण्ड के ३०वें सर्ग में रामजी का जानकीजी से वचन है। यथा

**देवगंधर्वगोलोकान्ब्रह्मलोकांस्तथापरान्।**
**प्राप्नुवंति महात्मानो मातापितृपरायणाः॥**

अर्थ - मातापिता की सेवा करने वाले महात्माओं को गंधर्वलोक, देवलोक, ब्रह्मलोक तथा गोलोक पर्यंत प्राप्त हो जाता है। ऐसा कहा है इसलिए गोलोक का भी नाम महर्षि जी ने कहा है।

प्रश्न - हे स्वामीजी ! कृष्णोपासक लोग गोलोक में स्वयं कृष्णजी का वर्णन करते हैं वही आपने भी कृष्णोपासना सिद्धांत में कहा है और फिर आपके मुख से सुना कि गोलोक में सर्वोपरि साकेतलोक है, यह कैसे ? कृपाकर के यह कहिये।

उत्तर - हे शिष्य ! इसमें यह भेद है कि गोलोक के मध्य में साकेतपुरी है और साकेत के पश्चिमदार पर वृन्दावन है, उत्तरद्वार पर जनकपुर है, पूर्वद्वार पर आनंदवन है, दक्षिण द्वार पर चित्रकूट है ऐसा विस्तार से सदाशिव संहिता में वर्णन है, और सर्वोपरि **शुकसंहिता** में विस्तार से वर्णन है। वही तुमको सुनाते हैं क्योंकि और संहिता के प्रमाण देने से अन्य उपासक लोग पक्षपात समझेंगे इसलिए **शुक संहिता** ही से कहना ठीक है जो कि स्वयं गोलोक ही में राजा परीक्षितजी से शुकाचार्यजी ने वर्णन किया है सो प्रथमाध्याय के द्वितीय पाद में राजा जनकजी के वचन हैं।
**यथा :-**

**कथं ब्रह्मविदां मध्ये संवादोऽयमजायत।**
**कथं वा विष्णुराताय त्वया पूर्वं प्रबोधितम्॥**
**गोलोकाख्यं च किं स्थानं यत्र संप्रति तिष्ठम्।**
**एतन्मे भगवन्ब्रूहि शुक कारुणिकोत्तम॥**

अर्थ - जनकजी बोले कि ब्रह्मवादियों के मध्य में यह वाद कैसे हुआ और विष्णुरात (परीक्षित) जी के लिये आपने कैसे पूर्व में बोध किया और गोलोक धाम नामक परमस्थान क्या है ? जहां परीक्षित जी हैं यह सब भगवन् ! करुणास्थान शुकदेवजी ! मुझे कहिये। बहुलाश्व राजा के यह वचन सुनकर शुकाचार्य स्वामीजी बोले।

**पुराहं ब्रह्मणो लोके उषित्वा शाश्वतीः समाः।**
**ब्रह्मवादे जायमाने सिद्धांते ब्रह्मवादिनाम्॥**
**रामः सर्वं हरिः सर्वमित्यश्रौषं मुहुर्मुहुः।**
**ततः श्वेतद्वीपपतेरनिरुद्धस्य संसदि॥**
**ब्रह्मप्रसंगवार्ता राम एव विधिः श्रुतः।**
**राम एव सदा ध्येयो ज्ञेयः सेव्यश्च साधुभिः॥**

**इत्य श्रौषमहं राजन् सिद्धांतेषु मुहुर्मुहुः ।**
**ततोऽनंतस्य शेषस्य साक्षान्नारायणात्मनः ॥**
**सदा सुसंगतोऽश्रौषं राममेव कथाविधिम् ।**
**नातः परतरं वेद्यं रामत्रैलोक्यनायकात् ॥**
**एक एव परं ब्रह्म रामो वेदेषु गीयते ।**
**इति श्रुत्वा विनिश्चित्य श्रीरामचरितं मया ॥**
**निर्मथ्य सर्वशास्त्रेषु संचितं पठितं स्मृतम् ।**
**स्थापितं हृदये नित्यं सर्वस्वं प्राणजीवनम् ॥**

शुकाचार्य जी बोले कि - पूर्वकाल में हमने ब्रह्मवादियों के मध्य ब्रह्मवाद से उत्पन्न यही सिद्धान्त बार बार सुना कि :- श्री राम ही सभी के दुखों का हरण करने वाले भगवान हरि हैं (दुःखं हरतीति हरिः) । इसके अतिरिक्त भी श्वेतद्वीप के स्वामी भगवान अनिरुद्ध के सानिध्य में ब्रह्मप्रसंग वार्ता में हमने श्रवण किया कि परब्रह्म श्री राम ही सर्वध्येय (सबके द्वारा ध्यान करने योग्य) हैं। श्री राम ही सभी साधु जनों के सेव्य हैं। हे राजन् ! ऐसा मैंने बार बार सुना है । उसके पश्चात भगवान श्री नारायण के अंतरात्मा स्वरूप श्री अनन्त शेष प्रभु से हमने श्री राम जी की ही कथा को श्रवण किया है। उन्होंने हमें यही समझाया कि त्रैलोक्यनायक भगवान श्री राम जी से परे जानने योग्य और कोई नहीं है। सभी वेदों में जिनका गान हुआ है, वही एक मात्र परब्रह्म श्री राम हैं। उनसे परे कोई और तत्त्व नहीं है। यह जो सिद्धान्त है इसे मैने श्रीरामचरित को सुनकर, सर्वशास्त्रों को मथकर, संचित करके, इसे सुनकर अपने हृदय में हमने नित्यपूर्वक सर्वस्व प्राणजीवन श्री राम को स्थापित किया है ।

**कदाचिद्गोलोकमध्ये जातोऽहं स्वेच्छया नृप ।**
**जाता गावः कामदुघाः शाखिनः कल्पशाखिनः ॥**
**यत्र वृन्दावनं नाम साक्षात्कृष्णवनं महत् ।**
**यत्र गोवर्द्धन गिरिर्मणिधातुविचित्रितः ॥**
**यत्र कल्लोलकलिता कालिन्दी सरितां वरा ।**
**तस्यास्तीरेषु पुष्पाढ्यं कदंबद्रुमकानने ॥**
**यत्र रासरसाऽवेशमत्ताः श्रीगोकुलांगनाः ।**
**यत्र क्रीड़ति कैशोरवेषः श्रीकृष्णचंद्रमाः ॥**
**मुरलीवादनपरो रूपमाधुर्य्यवारिधिः ।**

**लीलाधिदेवता तस्य यत्र श्रीवृषभानुजा ॥**
**सुंदरी राधिका नाम रतिकोटिविचत्वरा।**
**यत्र लीलारसांभोधौ ब्रह्मानंदसुधाकणः ॥**
**न ज्ञायते कविकल्पैर्भक्तिसारैकवेदिभिः।**
**गोपेन्द्रो यत्र नंदाख्यस्तस्य घोषाः सभादयः ॥**
**दिवानिशं प्रवर्द्धिष्णुर्महामंगलमंडितः।**
**कृष्णवात्सल्यरसभूर्यशोदा यस्य गेहिनी ॥**
**महाभाग्या महोदारा यत्र गोपा मुदान्विताः।**
**न यत्र म्रियते कश्चित्कालमायातिगेऽद्भुते ॥**

शुकाचार्य्य जी बोले कि हे राजन्! कभी गोलोक के मध्य में हम गए तो हमने देखा कि वहां हजारों कामधेनु गाय, हजारों वृक्ष कल्पवृक्ष के समान विद्यमान हैं। वहां श्री कृष्णचन्द्र जी का महान वन वृन्दावन सुशोभित है। वहां मणियों और रत्नों से युक्त गोवर्धन पर्वत विचित्र शोभा दे रहा है। वहां कल कल करती नदियों में श्रेष्ठ श्री यमुना जी प्रवाहित हो रही हैं। उसके तट पर पुष्पों से युक्त सुन्दर कदम्ब वन है। वहां रास में उन्मत्त गोकुलांगनाएं हैं और श्री कृष्णचन्द्र किशोर वेश में क्रीड़कर रहे हैं। वे मुरलीवादन में तत्पर हैं और रुपमाधुर्य की जलधि हैं। वहां लीला की स्वामिनी (लीलादेवी), अनंत कोटि रतियों की सुन्दरता को भी लज्जित करने वाली श्री वृषभानु पुत्री राधा जी विराजती हैं। उस लीला रस के सागर में ब्रह्मानन्द सुख के सुंधा कण हैं। इसे बड़े बड़े ज्ञानी लोग नहीं जान सकते हैं, केवल भक्ति के सार को जानने वाले ही जान सकते हैं। वहां सब गोपों में श्रेष्ठ श्री नन्द हैं, जिनकी सभा मण्डली से सुंदर शोर हो रहा है। दिन और रात महामंगल शोभा की वृद्धि हो रही है। वहां श्री कृष्ण जी के वात्सल्य में मग्न श्री नन्द जी की धर्मपत्नी श्री यशोदा जी हैं,जिनका महाभाग्य है ऐसे उदार गोप सखा आनन्द से परिपूर्ण विराज रहे हैं, वहां किसी की मृत्यु नहीं होती, यह स्थान काल और माया से रहित है।

**अलौकिको यत्र रविर्बोधयत्यंबुजाकरम्।**
**तथा विलक्षणश्चन्द्रो भुंक्ते कैरविणीर्निशि ॥**
**नित्योत्साहो नित्यसुखं नित्यकेलिरसोदयः।**
**नित्यनव्यतरं रूपं नवीनं यत्र मंगलम् ॥**
**तत्र गत्वा समाश्रित्य दिव्यश्री यमुनाजले।**

**वंशीवटतरोर्मूले नटंतं श्यामसुन्दरम् ॥**
**ददर्श गोपिकावृन्दैः सह रंजितकाननम् ।**
**तत्र ब्रह्मादयो देवाः कोटिजन्मार्जितैः शुभैः ॥**
**गोपिकाभावमासाद्य रमणं रमयंति ह ।**
**ऋषयः श्रुतयश्चैव गोपिकाभावभाविताः ॥**
**क्रीडंति प्रभुणा साकं महासौभाग्य मंडिताः ॥**
**तत्र गत्वा रसावेशादुच्चैर्गानकलस्वरैः ॥**
**अतीव रंजयामास गोपीमाधवयोर्मनः।**
**दृष्टो मया च तत्रैव पाण्डवेयो महामनाः ॥**
**परीक्षिन्नाम नृपतिः श्रुत्वा भागवतं पुरा ।**
**श्रीभागवतवक्तारं वंवदे मां पुरातनम् ॥**

वहां अलौकिक सूर्य कमलों को प्रफुल्लित कर रहे हैं। उसी प्रकार विलक्षण चन्द्रमा भी कुमुदिनी का रस ले रहे हैं। वहां नित्य उत्साह नित्य सुख नित्य केलि रस का उदय हो रहा है। जहां नित्य नव्यातिनव्य रुप प्रकाशित हो रहा है और नित्य नवीन मंगल हो रहे हैं। वहां जाकर दिव्य श्री यमुना जल में स्नानादि कर हमने वंशीवट वृक्ष के मूल में अलौकिक प्रकाशमान वन में गोपियों के समूह में श्यामसुंदर को नृत्य करते हुए देखा । वहां ब्रह्मादिक देवता कोटि जन्मों के संचित पुण्य के फल स्वरूप गोपिका भाव को प्राप्त होकर सुन्दर विहार कर रहे हैं। दंडकवन वासी, श्रुतियाँ सब गोपिका भाव में भावित हो रहे हैं। सब मिलकर प्रभु के साथ महासौभाग्य से शोभित होकर क्रीड़ा कर रहे हैं। वहां रस से परिपूर्ण होकर खूब ऊंचे स्वर से रसोन्मत्त होकर गान किया। इसे देखकर सभी गोपियों को और माधव प्रभु को खूब आनन्द हुआ। वहां हमने राजा परीक्षित को देखा । पूर्वकाल में हमने इनको भागवत सुनाई थी। इसलिए हमको भागवत का पुरातन वक्ता जानकर इन्होंने हमें प्रणाम किया और हाथ जोड़कर प्रेम से बोला ~

**भगवंस्त्वत्प्रसादेन श्रुतं भागवतं मया ।**
**नित्य लीलालयो वासो लब्धो गोलोक संज्ञकः ॥**
**कृतार्थीकृत एवाहं भवता करुणात्मना ।**
**एष में प्रश्नविषयो वर्त्तते मुनिसत्तम ॥**
**कदाचिदिह खेलंतं कृष्णं वृंदावने वने ।**
**आगतः पुरुषः कोऽपि स्निग्धश्यामल विग्रहः ॥**

**समानरूपमाधुर्य्यः समवीर्य्यवयोगुणः ।**
**चापेषुधिधरो वीरो वामे च प्रिययान्वितः ॥**
**तं दृष्ट्वा प्रियया साकं ववन्दे नन्दनंदनः ।**
**रामाय नम इत्युक्त्वा कृष्णस्तत्राविशत्स्वयम् ॥**
**तं दृष्ट्वा चकिता आसन्देवीदेवगणा अपि ।**
**आगंतुकः सपुरुषो वनमालाधरो विभुः ॥**
**मुरलीभूषितो भूत्वा विरेजे रासमण्डले ।**
**गोपीमण्डलमध्यस्थो ननर्त्त च तथा पुरा ॥**
**एतच्च चरितं दृष्ट्वा विस्मिता अभवन्सुराः ।**
**एतत्ते ब्रह्मराताय पृच्छामि च मुहुर्मुहुः ॥**
**किमेतद्भगवन्नासीत्कृष्णस्य पुरुषस्य च ।**
**किमर्थं भगवान्कृष्णः पुरुषं प्रविवेश ह ॥**
**एतन्मे वद योगीन्द्रं शुक कारुणिकोत्तम ।**
**तदाहं विष्णुराताय प्रावोचं मधुरं वचः ॥**
**इति श्रीशुकसंहितायां प्रथमाध्याये द्वितीयः पादः ॥**

राजा परीक्षित बोले - हे भगवन् ! पूर्वकाल में आपके मुख से मैंने श्री भागवत सुनी थी । उसी के फल स्वरूप श्री भगवान की नित्य लीला स्थली गोलोक का वास हमें प्राप्त हुआ। हे करुणा स्वरूप ! हे मुनिसत्तम! आपने हमें कृतार्थ कर दिया है। मेरे हृदय में एक प्रश्न है कि एक बार श्री कृष्णचन्द्र जी जब वृन्दावन में क्रीड़ा कर रहे थे उसी समय सुकोमल सुस्निग्ध श्यामल स्वरूप वाले कोई एक पुरुष आए । उनकी रूप माधुरी और वीर्यादि गुण श्री कृष्ण के ही समान थे। उनके हाथ में धनुष बाण और वाम भाग में उनकी प्रिया सुशोभित थीं। उन पुरुष को देखकर अपनी प्रिया सहित श्री नन्दनन्दन ने "रामाय नमः" ऐसा कहकर उन्हें नमस्कार किया। और उसी स्वरूप में दोनों प्रियाप्रीतम (श्री राधा कृष्ण)। इसको देखकर सभी देवी देवता गण चकित हो गए। अब वही पुरुष वनमाला और मुरली धारण करके रासमण्डल में प्रकाश करने लगे और उसी प्रकार नृत्य करने लगे जिस प्रकार श्री कृष्ण पूर्व में कर रहे थे। यह देखकर सभी देवताओं को बड़ा आश्चर्य हुआ । इसलिए हे भगवन्! मैं आपसे बार बार पूछता हूं कि श्री कृष्ण और वह पुरुष कौन हैं ? किस लिए कृष्ण भगवान पुरुष के स्वरूप में प्रवेश कर गए । हे

करुणा के स्थान योगिराज श्री शुकाचार्य्य स्वामी ! मुझे यह रहस्य बताइए। तब परीक्षित जी के बोध के लिए उन्होंने यह मधुर वचन कहे -

श्री शुक उवाच

**शृणु राजन्निदं तत्त्वं विष्णुरात रहस्यकम्।**
**रामस्य देवदेवस्य परमैश्वर्य्यसूचकम्॥**
**न वै स पुरुषः कश्चिन्न वे स पुरुषोत्तमः।**
**श्रीरामसंज्ञितं धाम परं ब्रह्म सनातनम्॥**
**कदाचिच्चित्रकूटाद्रौ क्रीडंतं पुरुषोत्तमम्।**
**मृगयाभिरतं वीरं रामं प्रोवाच जानकी॥**

हे राजन् ! हे विष्णुरात् ! ये परम रहस्य सुनो जो श्री राम (जो देवों के भी परम देव हैं) उनका परम ऐश्वर्य सूचित करता है। वे न तो कोई पुरुष(साधारण मनुष्य) हैं, न कोई पुरुषोत्तम(साधारण मनुष्यों में उत्तम) हैं, वह तो श्री रामधाम(साकेत) वासी सनातन परब्रह्म श्री राम हैं। कभी चित्रकूट पर्वत में क्रीड़ा करते हुए पुरुषोत्तम (सभी भगवद् पुरुषों में उत्तम) भगवान जो वीर हैं और मृगया में रत हैं, उनसे श्री जानकी ने कहा -

**श्री सीतोवाच**

**अतः परं प्रिय भवान् मृगयातो निवर्त्तताम्।**
**प्रस्वेदकणिकाभिस्ते मुखचन्द्रो विभूषितः॥**
**सूर्य्योऽपि चान्द्रिमाकांतस्तपस्तेपे महातपाः।**
**किंचित्कुंजं समालंब्य स्थीयतामधुना प्रिय॥**
**इत्युक्तः प्रियया रामो माधुरी कुंजमुत्तमम्।**
**प्राविशच्चित्रकूटाद्रिं कंदरांतरशोभितम्॥**
**नवमल्लिनामोदप्रमोदमधुभिर्वृतम्।**
**नवचूतांकुरास्वादमंजुलीलोपकोकिलम्॥**
**चन्दनानिल सौरभ्यसुवासितदिगंतरम्।**
**लवंगलतिकापाकसमुद्धररजःकणम्॥**
**सर्वर्तु शोभया जुष्टं विशालसरसान्वितम्।**

**फुल्लकह्लारकमल कदंबैकसुगंधिना ॥**
**तत्र गत्वा दंपती तो सीतारामौ मनोहरौ ।**
**प्रसूनशय्यां मृदुलामध्यासतुरनुत्तमाम् ॥**
**दर्शनस्पर्शनालापप्रिय संगसुनिर्वृतौ ।**
**तत्र सुस्थं प्रियं राम सीता प्रोवाच सस्मितम् ॥**

श्री जानकी जी ने कहा - हे प्रिय ! अब आप मृगया से निवृत्त होइए ! क्योंकि पसीने के बिंदुओं से आपका मुखचन्द्र विभूषित हो रहा है। सूर्य भी अत्यंत तप रहा है। इसलिए हे प्रिय ! कुछ समय थोड़ा कुंजलता के अवलंब में विश्राम कीजिए । ऐसा कहकर प्रिया प्रीतम श्री सीताराम जी दिव्य माधुरी कुँज में प्रवेश कर गए जो कि चित्रकूट(कामद) गिरि के कंदराओं में सुशोभित है। यह स्थान नवीन मल्लिका अर्थात अशोक वनों से तथा पुष्पों का रसास्वादन करने वाले सुन्दर भ्रमरों से युक्त है। नवीन आम्रादि सुस्वादु फलों से सुशोभित है। यहां भ्रमर गुंजायमान हो रहे हैं, कोकिलाएं सुंदर कल कल स्वरगान कर रही हैं, मलयवासयुक्त शीतल सुगन्ध मन्द वायु बह रही है। इससे दसों दिशाएं सुगन्धित हो रही हैं। और लवंग लतिकाओं से रज उड़ रही है। सभी ऋतुएं शोभायमान हैं। इस कुंज के मध्य में एक विशाल सर (पोखर) जो विचित्र मणियों से निर्मित है, शोभा दे रहा है। जिसमें चारों प्रकार के कमल खिले हुए हैं। और सभी दिशाएं कदम की सुगन्धि से सुगन्धित हो रही हैं। वहीं पर जाकर प्रियाप्रीतम श्रीसीतरामजी अति सुन्दर कोमल पुष्प शैय्या पर (दर्शन स्पर्शन आलाप प्रिय संग के निमित) सावधान होकर बैठे । तभी अपने प्रिय श्री रामजी को जानकी जी हंसकर बोलीं -

**आवां प्रियनिकुंजेऽत्र सर्वर्तु सुखशोभितम् ।**
**कच्चिन्न विहरिष्यावो राधाकृष्णाविव व्रजे ॥**

**श्रीराम उवाच -**

**त्वदंशा एव राधा सा प्रिये वृन्दावनेश्वरी ।**
**मदंश एव नियतः कृष्णो गोपेन्द्रनंदनः ॥**
**इत्युक्त्वा दर्शयामास तत्र वृंदावनं महत् ।**
**यमुनाजलकल्लोलशीतलीकृतमारुतम् ॥**
**नित्यं गोवर्द्धनगिरिच्छायाहरितकाननम् ।**

विस्तीर्णद्वादश वनं रमणीयसुरोचितम् ॥
द्वादशोपवनारामो वैकुण्ठालयसौख्यदम् ।
नंदगोकुलमानन्दं हंसाकलितगोधनम् ॥
नृत्तकीमण्डलायुक्तं वत्सवर्द्धितशोभितम् ।
उदारनंदगृहिणी यशोदाभाग्यभूषितम् ॥
कृष्णरासरसोन्मत्तगायद्गोपीकदंबकम् ।
कृष्णं च राधिकायुक्तं दर्शयामास राघवः ॥
श्रीमद्युयुगलनाट्येन नटंतं प्रेयसीयुतम् ।
दर्शयित्वा प्रियां प्राह रामस्त्रैलोक्यसुंदरः ॥
रासे नृत्यन्सुरैर्दृष्टो रामस्त्रैलोक्य सुन्दरः ।

हे प्रिय ! यहां सभी ऋतुओं से शोभित इस दिव्य माधुरी कुंज में हमने ब्रज में सुशोभित श्री राधा कृष्ण के समान रास नही किया। इसलिए हमारी इच्छा है कि उसी प्रकार हमारा भी रास हो ! इसे सुनकर श्री राम प्रसन्न होकर बोले - हे प्रिये ! तुम्हारी अंश ही वृंदावनेश्वरी राधा हैं और मेरे ही अंश गोपेन्द्रनन्दन कृष्ण हैं। ऐसा कहकर श्री किशोरी जी को राघव जू ने वहीं पर दिव्य वृन्दावन का दर्शन कराया जहां यमुना जी का जल कल कल करके प्रवाहित हो रहा है, जहां शीतल सुगंध मंद वायु बहती है, जहां नित्य गोवर्धन पर्वत है, जिसकी छाया में हरित वन है जो सुन्दर है और देवत्व से युक्त द्वादश वन सुशोभित है। द्वादश उपवन हैं जो वैकुंठ के समान सुख प्रदान करने वाले हैं। श्री नंद जी का गोकुल हंस के समान गोधन से युक्त है। भिन्न भिन्न नृत्य स्थलियां हैं जो नर्त्तकी मंडलों से युक्त हैं। जहां छोटे छोटे बछड़े शोभा दे रहे हैं। बड़ी उदार नंद जी की धर्म पत्नी श्री यशोदा जी सुशोभित हैं। कृष्ण रास के रस में उन्मत्त गोपी गायों और कदंब वृक्षों के समूह से आच्छादित राधिका जी के सहित श्री कृष्ण ने श्री राघव प्रभु का दर्शन किया। अपनी प्रेयसी से युक्त श्री युगल स्वरूप को नृत्य करते देखकर अपनी प्रिया से त्रैलोक्य सुंदर (तीनों लोकों में सबसे अधिक सुन्दर) श्री राम ने कहा -

प्रिये तव ममासौ च द्वाविमौ सह दंपती ।
माधुर्य्यलीलाकलिकाललितौ विश्ववभौ ॥
ततस्तद्युगलं श्रीमद्राधाकृष्णात्मकं महत् ।
सीतारामात्मकं युग्मं प्राविशन्नतिपूर्वकम् ॥
ततः प्रवृत्ते रामश्च सीतारामप्रधानकः ।

**गोपीजनकरोद्भूतमृदंगाऽऽनककाहलः ॥**
**मिथः सहचरीवृन्दकरतालविराजितः ।**
**झर्झरः शंखभेर्य्यादिवादित्रविततध्वनिः ॥**
**युगलाऽनुनयानंदी युगलो वयदीपितः ।**
**मिथो युगलनाट्यैक्यतुष्टाऽखिलसखीजनाः ॥**
**श्रीराममुरलीनादवर्द्धितानि सकौतुकः ।**
**सीता कलस्वरालापमुह्यत्सहचरीगणः ॥**
**कामोत्साहप्रदालापचुंबनालिंगनादिभिः ।**
**नर्मस्पर्शैर्नर्महासैर्भावैश्च बहुरूपकैः ॥**
**अनेकैर्मधुरालापैर्भूपितश्च महोत्सवः ।**
**शश्वद्युगलनाट्येन सीतारामौ विरेजतुः ।**
**कदाचिद्गोपिका तुल्य सख्या केनात्मना विभुः ॥**

हे प्रिये ! तुम्हारे और मेरे स्वरूप ही यह दोनों प्रिया प्रीतम दिव्य दंपति राधा कृष्ण हैं । वे दिव्य माधुर्य लीला से युक्त हैं और संसार को दोनों प्रिय हैं। ऐसा कहने के पश्चात ही महान युगल स्वरूप श्री राधा कृष्ण दिव्यतम् युगल श्री सीतारामस्वरूप में प्रविष्ट हो गए । इसके पश्चात प्रधान रूप में केवल श्री सीताराम जी का स्वरूप ही रह गया और वे ही वृंदावन में अपनी प्रिया के संग रासलीला करने लगे । उस समय गोपियों के हाथ में बड़े अद्भुत मृदंगादि बाजे बजने लगे , सखियों के वृंद झांझ, शंख, भेरी, बीन, मुरचंग आदि भिन्न भिन्न बाजों से स्वर गान करने लगीं । उस समय सब युगल स्वरूप के अनुकूल ही कार्य करने लगीं। और युगल सरकार भी कैशोर अवस्था में स्थित हो गए और दोनों ने परस्पर एक भाव में अनन्त रस से परिपूर्ण होकर ऐसा नृत्य किया कि सभी सखी गण तृप्त हो गईं। श्री राम जी ने मुरलीनाद और नाना प्रकार के कौतुक से सभी को दिव्य आनन्द प्रदान किया उसी प्रकार श्री जानकी जी ने सुन्दर स्वरालाप से सब सहचरी गणों को मोहित कर दिया । वहां अप्राकृत चुम्बन, दिव्य आलिंगन आदि से रामजी के लिए दिव्यकामोत्साह बढ़ रहा है। कोमल स्पर्श से, कोमल हास से, कोमल भाव से अनेक विधि , मधुर आलाप से श्री सीताराम जी ने रास मण्डल को दिव्य आनन्द से परिपूरित कर दिया। निरंतर श्री युगल स्वरूप श्री सीताराम जी का नृत्य हो रहा है, कभी वे गोपिका समान हो जाते हैं, कभी सखीरूप हो जाते हैं, कभी गुप्त हो

जाते हैं, कभी गुप्त हो जाते हैं फिर कभी प्रकट हो जाते हैं इस प्रकार त्रिलोक सुन्दर श्री राम जी को रास करते हुए सभी देवताओं ने देखा।

**कदाचिद्गोपिकायुग्ममध्यवर्तीकिशोरकः ॥**
**रासे नृत्यन्वभौ रामो नीलमेघमनोहरः ।**
**रत्नप्रतप्तसौवर्णकिरीटशिखिपिच्छकः ॥**
**गुंजाहारधरः श्रीमान्प्रोल्लसज्जघनाम्बरः ।**
**नृत्यतालकरोद्भावमणिरत्नांगुलीयकः ॥**
**मुरलीनादमधुरः कोटिकंदर्पसुन्दरः।**
**एवं नंदात्मजः कृष्णस्वावतारसमापनम् ॥**
**रामं प्रविशति श्यामं सच्चिदानंद विग्रहम् ॥**
**सोऽद्यापि क्रीडति गिरौ चित्रकूटे मनोहरे ॥**
**नित्यं वृन्दावने एव माधुरीकुंजमध्यगे ।**
**आगामिनि द्वापरांते कंसादिभिरुपद्रुते ॥**
**लोके धर्मस्य रक्षार्थं वसुदेवस्य वेश्मनि ।**
**प्रादुर्भूय व्रजेन्द्रस्य गोकुले विहरिष्यति ॥**
**एवं कृष्णोऽविशद्रामे पूर्णे स्वानन्दविग्रहे ।**
**दृष्टो रामः परं तत्त्वं यत्र चापि न गोचरः ॥**
**इति श्रीशुकसंहितायां प्रथमाध्याये तृतीयपादः ॥**

कभी दो गोपियों के मध्य में नित्य किशोर प्रकट हो जाते हैं, ऐसे नील मेघ के समान मनोहर श्री राम रासमण्डल में नृत्य करते हैं। उनके सिर पर रत्नजड़ित प्रतप्त सुवर्ण (तपाए हुए सोने की कांति वाला) का किरीट शोभा दे रहा है, गले में गुंजा की माला शोभा दे रही है, कांतियुक्त तड़ित से पीताम्बर शोभित है, नृत्य में भावयुक्त अरुण हाथ हैं जिनमें मणि रत्नों से जड़ित मुद्रिका शोभायमान है। मुरली की नाद बहुत ही मधुर है। कोटि कोटि कामदेवों को लज्जित करने वाला प्रभु का सौंदर्य है। ऐसे श्री नंदात्मज कृष्ण स्वावतार कारण (अपने अवतार के कारण) श्री राम जी के सच्चिदानन्द स्वरूप में प्रवेश करते हैं। वही युगलपरब्रह्म आज भी सुन्दर चित्रकूट पर्वत में क्रीड़ा करते हैं, वह चित्रकूट ही नित्य वृंदावन है जिसके मध्य में स्थित माधुरी कुंज में युगल सरकार श्री सीतारामजी नित्य रास क्रीड़ादि करते हैं। वहीं श्री राम आगे द्वापरान्त में कंसादिक के उपद्रव से लोक

में धर्म की रक्षा के लिए वसुदेव गृह में व्रजेन्द रूप से प्रकट होकर गोकुल में विहार करेंगे। ऐसे श्रीकृष्ण अपने पूर्णानन्द विग्रह श्री राम (अर्थात उनके जो परम तत्त्व हैं जिनसे आनंद प्रदान करने का गुण श्री कृष्ण को प्राप्त हुआ है) में प्रवेश करते हैं। इसलिए आपने गोलोक में इस लीला के माध्यम से श्री राम जी का असाधारण परत्व देखा (जो सभी को अगोचर है)।

(भाव :- श्री राम जी ही परतत्त्व हैं ऐसा श्री परीक्षित जी ने गोलोक में इस प्रवेश लीला के माध्यम से जाना)

**तत्र रासे प्रादुरासीद्ब्रह्माणी ब्रह्मकोटयः।**
**वैष्णवी विष्णुकोटयश्च रुद्राणी रुद्रकोटयः॥**
**सर्वाश्च देवतास्तत्र गोपिकाभावभाविताः।**
**रासमण्डलमध्यस्था ननृतुः स्वामिना सह॥**
**तथा षष्टिसहस्राणि दण्डकारण्ययोगिनाम्।**
**गोपीभावं समासाद्य रेजुः श्रीरासमण्डले॥**
**श्रुतयश्चैव कालश्च रासमण्डलमध्यगाः।**
**गोपीरूपधरा रेजुर्महासौभाग्यभूषिताः॥**
**कालश्च तत्र नियतं पूर्णिमाशारदी हि सा।**
**वातश्च तत्र सततं सुरभिश्चंदनद्रुमैः॥**
**भूमिश्च रत्नमाणिक्यप्रतप्तकनकोऽज्वला।**
**जलं यमस्वसा साक्षात्पीयूषाधिकसुंदरम्॥**
**उज्ज्वलांशुचयो यत्र मध्यरात्रगतः शशी।**
**राकापि या प्रभोर्लीला सा नित्यैव न संशयः॥**
**सीता च सुंदरी यत्र सर्वलीलाधिदेवता।**
**चित्रकूटाद्रिके रम्ये यवृंदावनमद्भुतम्॥**
**गोलोकोऽयं स एवात्र दृश्यते पुरतस्तव।**
**सीताऽऽभिलाषसंभूत्ये श्रीरामेण विनिर्मितः॥**

वहां श्री राम जी के रास में कोटि ब्रह्मा कोटि कोटि ब्रह्माणी कोटि लक्ष्मी कोटि विष्णु कोटि पार्वती कोटि शिव उत्पन्न हुए। वहां सभी देवता लोग गोपी भाव को प्राप्त हो गए और अपनी स्वामिनी के सहित रासमण्डल में नृत्य करने लगे। उसी प्रकार 60 हजार दंडक वनवासी सब ऋषि लोग भी गोपिका भाव को प्राप्त

होकर रासमंडल में प्रकाश करने लगे और सभी श्रुतियां तथा काल ये सब भी रासमण्डल में गोपीरूप धरके महासौभाग्य से भूषित होकर प्रकाश करने लगे। वहां काल भी नियत होकर शरद पूर्णिमा को प्रकट किया। वहां मलयवास युक्त सुगंधित वायु बहने लगी। पृथिवी की कांति माणिक्यमय तप्त कांचन के समान हो गई और जल अमृत से भी अधिक सुंदर हो गया। और मध्य रात्रि होने से चन्द्रमा भी उज्ज्वल और पवित्र हो गया। उसी प्रकार प्रभु की रासलीला में पूर्णिमा रात्रि भी उज्ञवल पवित्र हो गई। जहां त्रिभुवन सुन्दरी श्री जानकी जी , जो सभी लीला की अधिदेवता हैं और जहां चित्रकूट पर्वत में ही वह सुन्दर अद्भुत वृन्दावन है। वही सर्वोपरि गोलोक आपको यहां दिखाई पड़ता है। उस गोलोक का निर्माण श्री सीताजी की अभिलाषा पूर्ण करने हेतु श्री राम जी ने किया है। यह सुनकर राजा बोले

**विष्णुरात उवाच**

**कथं सीताऽभिलाषेण गोलोक निर्ममे प्रभुः ?**
**एतन्मम समाचक्ष्व मुनीन्द्र परिपृच्छतः ॥**

**श्रीशुक उवाच**

**कल्पादौ भगवान् रामः स्वेऽच्छा मात्रेणचोदितः।**
**त्रैलोक्यं कृतवाञ्जगादाविर्भावं प्रदर्शयन् ॥**
**अमोघमुप्तवान्बीजमंशुं सप्तार्णवेषु सः।**
**हिरण्यगर्भसंकाशः सूर्यकोटिसमप्रभः ॥**
**ततश्चराचरस्यादौ तत्त्वसृष्टिं विनिर्ममे।**
**तेषु चैतन्यमाधाय ब्रह्माण्डं संजघाट सः ॥**
**उच्चावचानि भूतानि रचयामास विश्वकृत।**
**मही रचितवान्देवः सप्तसागरसंवृताम् ॥**
**पर्वतान् विविधान्रम्यान्देवगंधर्व भोगवान्।**
**सरांसि रम्यरूपाणि राजहंसाश्रयाणि च ॥**
**उत्फुल्लकमलामोदवारीणि रुचिराणि च।**
**मेरुं रचितवांस्तत्र स्थानानि त्रिदिवौकसाम् ॥**
**एवं कृत्वा जगत्सर्वं सदेवासुरमानुपम्।**
**देवानामसुराणां च मनुष्याणां च सौख्यदम् ॥**

**वासं प्रकल्पयामास गृहारामादिशोभितम् ।**
**ततः सीता स्वयं प्राह रामं कमललोचनम् ॥**

राजा परीक्षित बोले - हे मुनींद्र! श्री जानकी जी के अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए श्री राम जी गोलोक का कैसे निर्माण किए ? इसको कहिए ! श्री शुकाचार्य स्वामी जी बोले :- कल्प के आदि में भगवान श्री राम जी ने अपनी इच्छा की प्रेरणा मात्र से तीनों लोक अपने शरीर से उत्पन्न किया और वहां प्रथम वैष्णवी वीर्य तेज कोटि कोटि सूर्य से प्रकाशित सुवर्ण कांतिवाला एक गोलाकार अंड हो गया । उस अंड में सर्व लोक रचनाकार हिरण्यगर्भ ब्रह्मा प्रकट हुए। उन्हीं से सभी चराचर पैदा हुए उसी में चैतन्य स्थापन करके कोटि कोटि ब्रह्माण्ड बनाए । और सभी योनियों वाले जीवों का निर्माण किया और सप्त सागर युक्त पृथिवी को रचा तथा देव गंधर्व के भोगवान सुंदर नाना प्रकार के पर्वतों को रचा। सुंदर रमणीय राजहंसों से युक्त सरोवर रचे जिनमें दिव्य जल भरा है और नाना प्रकार के आनंद दायक कमल खिले हुए हैं। एक लक्ष योजन वाले सुमेरू पर्वत रचे। इंद्रादि ३३ कोटि देवताओं के भिन्न भिन्न स्थानों को रचा । ऐसे देवता असुर मनुष्यों सहित सम्पूर्ण संसार को रचकर फिर मनुष्यों को सुख देने वाले घर बाग सुंदर रचे तब कमललोचन श्री राम जी से स्वयं जानकी जी बोलीं -

**श्री सीतोवाच**

**इच्छामात्रेण ते कांत सरत्नं भुवनत्रयम् ।**
**अतीव सुंदरं भाति प्रासाद इव भूयते ॥**
**स्वर्गमृत्युतलांतस्थः सततं सुखमासने ।**
**स्वेषु स्वेषु निवासेषु गृहारामादिमत्सु च ॥**
**पुरातनमिदं स्थानमस्माकं तु तदेव हि ।**
**कोशलाख्यं पुरं दिव्यं प्रलयेऽप्यविनश्वरम् ॥**
**इदं त्रैलोक्यमखिलं प्रलयेऽनंक्ष्यति प्रभो ।**
**अविनश्वरमेवैकमयोध्यापुरमद्भुतम् ॥**
**तत्रैव रमसे नाथ ह्यानन्दरसनिर्वृतः ।**
**नवीनं न कृतं स्थानं स्वभोगाय कथं प्रभो ॥**
**स्वतंत्रेच्छोऽसि भगवंस्तथापि च निबोध मे ।**
**मदुत्कण्ठावशेनैव कुरु स्थानं मनोरमम् ॥**
**अयोध्यायाः प्रतिकृतिर्यत्र सर्वं विलोक्यते ।**

**राजानः कुर्वते नव्यं पुरस्थानेषु सत्स्वपि ॥**
**एवमभ्युदितो रामः प्रियया सामिलापया ।**
**सर्वेषां चैव लोकानामुपरि स्थानमद्भुतम् ॥**
**गोलोकं कल्पयामास प्रादुर्भाव्य स्वलोकतः ।**
**अयोध्यायाः प्रतिकृतिर्यत्र सर्वापि दृश्यते ॥**

श्री जानकी जी बोलीं - हे स्वामी ! आपने अपनी इच्छा मात्र से सर्व रत्नों से युक्त तीनों लोकों को अति सुन्दर प्रकाशमय महल के समान(भूलोक, भुवः लोक , स्वरलोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक तथा अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, महातल, पाताल पर्यन्त) अपने अपने निवास स्थान में घर बाग तलाबादि रचा परन्तु यह मेरा स्थान पुरातन है जो कि कोशल(अयोध्या) साकेत नाम से अतिप्रसिद्ध है जिसका प्रलय में भी नाश नहीं होता है। यह तीनों लोक प्रलय में नाश हो जाते हैं केवल एक आश्चर्यमय अयोध्या ही अविनाशी पुरी है हे नाथ ! हम उसी पुरातन स्थान में रमण विहार करते हैं। हे नाथ ! स्वभोग के लिए आपने नवीन स्थान का निर्माण क्यों नहीं किया ? हे भगवन् ! यद्यपि आप स्वतन्त्र हैं तथापि मैं आपसे निवेदन करती हूं कि मेरी उत्कंठा के वशीभूत आप एक मनोरम स्थान का निर्माण करिए। जहां अयोध्या कि ही प्रतिकृति (प्रतिबिंब) सर्वत्र दृष्टिगोचर होती रहे। राजालोग  भी नवीन पुरी का स्थापन करते हैं। उसी प्रकार आप अपनी प्रिया के लिए पुरी का निर्माण करिए। तब श्री सीता जी की अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए सभी लोकों से ऊपर अद्भुत स्थान गोलोक को स्वलोक साकेतपुरी के अंश से अपनी दिव्य कल्पना से प्रकट किए जहां सभी कुछ अयोध्यापुरी का ही प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है।

**यमुनायाः परिणता सरयू सरसा सरित् ।**
**अभूद्गोवर्द्धनत्वेन दिवि रत्नमयो गिरिः ॥**
**प्रमोदवनमत्रासीद्दिव्यं वृन्दावनं वनम् ।**
**पारिजाततरुर्जातो वंशीवटतरुर्हि सः ॥**
**ते च रासविलासाद्याः प्रादुरासुः समंततः ।**
**आभीरोऽसुखिनो नाम रामधात्रीपतिः पुरा ॥**
**स एव समभून्नंदो मांगल्या च यशोदिका ।**
**त एव गोपीगोपाद्या लीलापरिकराश्च ते ॥**
**सैव श्रीजानकी देवी वृषभानुसुताऽभवत् ।**

**अशोकवनगा तत्र ह्यत्र वृंदावनेश्वरी ॥**
**तया सह बभौ रामो वंशीवादन कौतुकी ।**
**नित्यरास विलासादिकुर्वाणः सुमनोहरम् ॥**
**गोलोकमखिलं वीक्ष्य लीलापरिकरान्वितम् ।**
**सद्यः प्रसन्नहृदया प्रोवाच निजवल्लभम् ॥**

**श्री प्रियोवाच**

**दृष्ट्वेदमद्भुतं स्थानं संपूर्णा मे मनोरथाः ।**
**अयोध्यायाः प्रतिकृतिः क्वचित्तावत्ततोधिकाम् ॥**
**आवां यत्रैव रंस्यावः सुचिरं कामकेलिभिः ॥**
**अतीव सुंदरे स्थाने सच्चिदानंदमंदिरे ॥**
**एवमुक्तस्तया सार्द्धं रेमे वृन्दावने प्रभुः ।**
**यथा गायंति मुनयो महाभावविभूषिताः ॥**
**इति श्रीशुकसंहितायां प्रथमाध्याये चतुर्थपादः ॥**

श्री सरयू जी ही दिव्य यमुना रूप में परिणत हुई । श्री रत्नगिरि (मणिपर्वत) से ही गोवर्धन पर्वत हुआ और प्रमोद वन से ही दिव्य वृन्दावन हुआ। कल्प वृक्ष से ही वंशी वट हुआ और उस रास विलास से जो उत्पन्न हुए आभीर(गोप) जो पूर्व में दुखित नाम वाले धात्रीपति थे वहीं नन्द जी हुए और मांगल्या नाम की गोपी ही यशोदा जी हुई और पूर्व लीला में जो परिकर थे वही सब गोपी गोपादिक हुए। श्री जानकी जी ही राधा जी हुई और अशोकवन में जो देवी रहीं वही वृन्दावनेश्वरी(वृन्दादेवी)हुई , उनके सहित श्री राम जी राधा कृष्ण होकर वंशी नाद में निपुण बड़े कौतुक करके नित्य रास विलासादि करके सुन्दर लग रहे हैं। लीला परिकरों से युक्त अखिल गोलोक को देखकर सहज ही प्रसन्न होकर श्री जानकी जी अपने स्वामी से बोलीं -

इस अद्भुत स्थान को देखकर मेरे संपूर्ण मनोरथ सिद्ध हो गए । यहां इस स्थान में श्री अयोध्या का विभव तो है कदाचित विशेष नवीन होने के कारण यह मधुर लीलाओं का रसास्वादन करने के लिए यह अधिक विशेष है। यही पर आकर हम दोनों इस अतिसुंदर स्थान जो सच्चिदानंद मंदिर है , यहां रस से परिपूर्ण सुचिर काम केलि करेंगे । इस प्रकार मुक्त रूप से श्री सीताराम जी वृंदावन में

विहार करने लगे जिस लीला का गान करके मुनि जन महाभाव से विभूषित हो जाते हैं।

इसलिए हे शिष्य ! श्री शुकदेव जी के मत में श्री सीताराम जी को छोड़कर दूसरे कोई परब्रह्म नहीं हैं। जो दिव्य भगवद स्वरूप जितने जान पड़ते हैं सो सब श्री सीताराम जी के ही अंश कला विभूति हैं। लेकिन श्री सीताराम जी तो साक्षात सबके मूल स्त्रोत हैं। श्री सीताराम जी को छोड़कर जो कोई दूसरे को पर तत्त्व प्रतिपादन करते हैं वह मूर्ख श्री सीताराम जी की परम सत्ता के वैभव से विमुख हैं ऐसे लोगों का संग नहीं करना चाहिए।

सदाशिव संहिता के प्रथम अध्याय में लिखा है कि साकेत लोक में चार द्वार हैं जिसमें पश्चिम द्वार पर ही वृन्दावन है जहां विभीषण जी द्वारपाल हैं यथा -

**पश्चिमां पाति धर्मात्मा राक्षसेन्द्रो हरिप्रियः।**
**पूर्वमावृत्य विश्वात्मा सुग्रीवस्तेजसात्मकः॥**
**उत्तरं रक्षति वीरो वालिपुत्रो मम प्रियः।**
**दक्षिणं तु सदा पाति हनुमान्नामवत्सलः॥**
**सर्वसत्त्वगुणोपेतः सर्वसत्त्वनिकेतनः।**
**महाशंभुः स्वयं सोऽपि कपिरूपो दुरासदः॥**
**मत्स्यकूर्मवराहाश्च नृसिंहहरिवामनौ।**
**भार्गवो हलिकंसारिबुद्धकविभिरुद्यतैः॥**
**उपास्यमानं देवेशं देवानां प्रवरं विभुम्।**
**साकेतपश्चिमद्वाराद्वृंदावनमदूरतः॥**
**गोगणैरावृतः श्रीमान्क्वणद्वेणुविनोदकृत्।**
**सर्वरासरसोन्मत्तो गोपकन्या समावृतः॥**
**गोवर्द्धनगिरिस्तत्र यत्र देवः प्रतिष्ठितः।**

**(पुनः द्वितीयाध्यायेऽपि)**

**अवतारैरसंख्यातैः प्रधानैर्दशभिस्तथा॥**
**वेदैः सांगोपनिषदैर्यज्ञैर्बहु विधैरपि।**
**सेव्यमाने परे रम्ये गुणावासे परं पदे॥**

श्री साकेतपुरी के पश्चिम द्वार पर श्री रामप्रिय धर्मात्मा राक्षसराज विभाषण रहते हैं। पूर्व दिशा में विश्वात्मा तैजसात्मक श्री सुग्रीव जी रक्षा करते हैं और उत्तर में वीर शिरोमणि वालिपुत्र जो मुझे प्रिय है वो रहते हैं । दक्षिण में सदा रामप्रिय हनुमान जी विराजमान हैं जो सभी दिव्य गुणों से विभूषित हैं और विशुद्ध सत्व के विग्रह हैं। ये श्री हनुमान जी स्वयं महाशंभु हैं जो स्वयं दुस्तर वानर के रूप में होकर श्री राम जी की सेवा करते हैं। और मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह, हरिवामन, परशुराम, बलदेव, श्री कृष्ण, बुद्ध, कल्कि आदि अवतारों से सेवित श्री राम जी शोभा दे रहे हैं। श्री साकेत के पश्चिम द्वार पर ही वृन्दावन सुशोभित है जो गो समूह से आवृत है और वेणु नाद से गुंजायमान है। सर्वत्र रास रस से उन्मत्त गोपकन्या से युक्त है। वहां गोवर्धन गिरी है जहां गोवर्धन नाथ प्रतिष्ठित हैं।

पुनः दूसरे अध्याय में कहा है कि असंख्य अवतार जिनमें दस अवतार प्रधान हैं उनसे तथा वेदादिक उपनिषदों से तथा नाना प्रकार के यज्ञों द्वारा श्री राम जी सेवित हैं।

हे शिष्य ! इस प्रकार सभी वेदों उपनिषदों इतिहास पुराणादिकों तथा धर्म शास्त्र योगशास्त्र आदि ग्रंथों से यह सिद्ध है कि श्री सीताराम जी को छोड़कर दूसरा कोई परब्रह्म नहीं है केवल श्री सीताराम जी ही वास्तव में परब्रह्म हैं।

**इति श्रीमदयोध्यावासिवैष्णवश्री सरयूदासविरचितरामोपासना सिद्धान्तः समाप्तः।**